



(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 54, अंक 4, अक्टूबर, 2018

मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये



1. नई दिल्ली : भारत के महामहिम राष्ट्रपति भ्राता रामनाथ कोविंद जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. पुष्पा बहन तथा बहन सविता कोविंद जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. शोभा बहन।
2. नई दिल्ली : भारत के माननीय प्रधानमंत्री भ्राता नरेन्द्र मोदी जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. हुसैन बहन।



1. जगन्नाथ पुरी : गोवर्धन पीठ पुरी के शंकराचार्य स्वामी निच्छलानन्द सरस्वती जी को राखी बांधती हुई ब.कु. प्रतिमा बहन। 2. ज्ञानसरोवर(माउण्ट आबू) : 'माइंड-बॉडी-मेडिसिन' विषय पर आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब.कु. शिवानी बहन, डॉ. अर्चना ठाकुर, निदेशिका, जी.बी.पंत हॉस्पिटल, दिल्ली, डॉ. मेहता, शासकीय प्रशासक, ब.कु. मृत्युन्जय, डॉ. बनारसी एवं अन्य। 3. काठमाण्डू : नेपाल की महामहिम राष्ट्रपति बहन विद्या देवी भण्डारी जी को राखी बांधती हुई ब.कु. राज बहन। 4. विशाखापट्टनम : भारत के उपराष्ट्रपति भाता वैनकैया नायडू जी को राखी बांधती हुई ब.कु. शिवलीला बहन। 5. नई दिल्ली : भारत के पूर्व राष्ट्रपति भाता प्रणव मुखर्जी जी को राखी बांधती हुई ब.कु. आशा बहन। 6. शान्तिवन(आबूरोड) : साहंस्टिस्ट एण्ड इंजीनियर विंग द्वारा आयोजित नेशनल कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब.कु. ब्रजमोहन जी, गुजरात भाजपा की प्रदेश उपाध्यक्षा बहन रमीलाबेन बारा, भाता आर.के.रतन, ऑपरेशन वॉइस प्रेसिडेंट, हीरो साहकिल, ब.कु. मोहन सिंघल, भाता सूर्यराज कदेल, कार्यकारी निदेशक, वाटर स्पलाई प्रोजेक्ट, नेपाल, ब.कु. मृत्युन्जय एवं अन्य। 7. दिल्ली : भारत के गृह मंत्री भाता राजनाथ सिंह जी को राखी बांधती हुई ब.कु. लक्ष्मी बहन। 8. शान्तिवन (आबूरोड) राजस्थान की मुख्यमंत्री बहन बसुंधरा राजे सिंधिया जी को सम्मानित करती हुई राजयोगिनी दादी जानकी जी। साथ में ब.कु. मुन्नी बहन एवं ब.कु. हंसा बहन।

दृढ़ संकल्प

यह अनुभव-सिद्ध बात है कि दृढ़ता के बिना अन्य दिव्य गुण हमारे आचरण में स्थायी रूप से स्थापित नहीं हो सकते। अतः दृढ़ता सर्वप्रधान अथवा परमवाश्यक है। जिस मनुष्य का मनोबल (Will-Power) कम हो, जिसके संकल्प में दृढ़ता न हो, वह कोई भी महान कार्य सफलतापूर्वक नहीं कर सकता। वह आज अपने जीवन में कोई अच्छाई धारण करता है तो कल उसे छोड़ देता है। वह प्रातः कोई प्रतिज्ञा करता है तो शाम तक उसे भंग कर देता है। उसमें अच्छा बनने की इच्छा (Will) तो होती है परन्तु उसे पूर्ण करने की शक्ति (Power) नहीं होती। अतः पुरुषार्थ के लिए जरूरी है कि मनोबल अथवा दृढ़ता बढ़े। परन्तु स्पष्ट है कि मनुष्य में, स्वयं में तो बल है नहीं, अवश्य ही यह बल उसे किसी से लेना होगा। अच्छाई के लिए आत्मबल अथवा शक्ति तो परमपिता ही से प्राप्त हो सकती है क्योंकि एक वह ही सर्वशक्तिवान है। उससे शक्ति लेने के तरीके को ही 'योग' कहा जाता है। योग से आत्मबल अथवा मनोबल निश्चय ही प्राप्त होता है।

मनोबल में वृद्धि के लिए अनुकूल विचारधारा —

दूसरी बात यह है कि जब मनुष्य प्रतिज्ञा करने के बाद उसे निभा नहीं पाता तो उसका मन दुःखी ही नहीं होता

बल्कि आगे के लिए उसके संकल्पों में दृढ़ता भी नहीं रहती। उसकी वृत्ति में निराशा बनी रहती है और आत्म-विश्वास भी नहीं रहता। इसके बजाय यदि मनुष्य थोड़ा समय भी अपने भीतर की दूषित इच्छाओं के तीव्र वेग का दृढ़तापूर्वक सामना कर ले तो उससे थोड़ी-सी सफलता से भी उसका उत्साह, आत्म-विश्वास तथा मनोबल इतना बढ़ेगा कि वह बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का, आलोचना का तथा मानसिक तूफानों का भी सामना कर सकेगा। इसके लिये यह जरूरी है कि मनुष्य यह याद रखे कि मेरे सामने जो परीक्षाएं आ रही हैं, वे सफलता की सीढ़ियाँ हैं, वे क्षणिक हैं। उनको गुजार लेने से जीवन में महानता तथा सदगुणों का विकास ही होगा।

सभी जानते हैं कि यदि किसी भवन की नींव सुदृढ़ न हो तो भवन अधिक समय तक टिक नहीं सकता। ठीक इसी प्रकार, यदि मनुष्य के संकल्पों में दृढ़ता न हो तो उसका पुरुषार्थ भी चिर-स्थायी नहीं होता। थोड़ा-सा विघ्न उपस्थित होने पर किंवा थोड़ी-सी बाधा आने पर वह हथियार डाल देता है; अपने लक्ष्य को छोड़ देता है। यह बहुत बड़ी दुर्बलता है। संसार में दृढ़ विचार वाले व्यक्तियों ने ही उच्च कर्तव्य किये हैं। यदि ऐसे व्यक्ति संसार में न होते तो समाज ने वैज्ञानिक, आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में इतने प्रकार की जो भी प्रगति की है वह हमें उपलब्ध न होती। ■■■

अमृत-सूची

● प्रतिशोध नहीं, परोपकार	4	● जागो मेरी बहना (कविता)	22
● प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के	7	● जिस्मानी सेना से रूहानी सेना तक का सफर	23
● डिप्रेशन क्या है ?	9	● बाबा के दिव्य ज्ञान ने जीवन बदल दिया	24
● पत्र सम्पादक के नाम	10	● नास्तिक से स्वाध्याय तक, स्वाध्याय से स्वपरिवर्तन तक	25
● एक पत्र वरिष्ठ नागरिकों के नाम	11	● बाबा की प्रेरणा से आँखों की रोशनी मिली	27
● घृणा से परहेज	14	● सचित्र सेवा समाचार	28
● माँ दुर्गा की कहानी	15	● महिला सशक्तिकरण	30
● माँसाहार करना और कराना - दोनों ही महापाप हैं	18	● सचित्र सेवा समाचार	32
● ईश्वरीय ज्ञान ने मेरी जिन्दगी बदल दी	20	● एक सेकण्ड	34
● भूल में छिपा भला	21		

प्रतिशोध नहीं, परोपकार

मनव जीवन हीरे तुल्य है, यह हम सदियों से सुनते आये हैं। आज का संसार मनुष्यों से भरपूर है। चारों तरफ इन्सान हैं परन्तु जीवन में हीरे जैसी चकाचौंध नहीं है। मनुष्य जीवन को उच्च बनाने वाली उच्च भावनाओं के स्थान पर उसमें और-और प्रकार की तुच्छ भावनायें आ गई हैं जिसके कारण अपने हाथों, अपने जीवन को उसने नारकीय बनाया है। इस प्रकार की भावनाओं में अत्यन्त विध्वंसकारी भावना है बदले की भावना, ईट का जवाब पत्थर से देने की भावना, दूसरों को मजा चखाने की भावना, दूसरे को गलत सिद्ध करने के लिए कुछ अमर्यादित कर दिखाने की भावना। यह भावना पानी की उछाल की तरह छोटी-छोटी बातों में बड़ी सहज रीति से मानव में उभर कर आ रही है। धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते यह उछाल बाढ़ का रूप धारण कर विनाशकारी बन जाती है। मनुष्य की श्रेष्ठ वृत्तियाँ बदले की भावना में जलती जाती हैं। चेतना काली पड़ जाती है। कल्याणकारी शक्ति का प्रवाह अकल्याण की ओर हो जाता है।

लक्ष्य में मन एकाग्र करें

बदले का भाव लक्ष्यविहीनता की निशानी है। जैसे रास्ते में पड़े पत्थर को कोई कहे, तुम हटो तो मैं चलूँगा या तुम मेरे रास्ते में आए हो, इसके बदले मैं तुमको उखाड़ फेंकूँगा। परन्तु पथिक का रास्ता लम्बा होता है, उसे सोचना चाहिए कि ऐसे तो अनेकों परिस्थितियों रूपी पत्थर रास्ते में आएँगे, किस-किस से वह जूझता रहेगा। इससे तो वह

लक्ष्यविहीन हो जायेगा। निश्चित लक्ष्य को लेकर अनवरत गति से बहती नदी की धारा को हम देखें। उसके हृदय में समुद्र के साथ एकाकार हो जाने की तड़प होती है। उसकी तेज धार के आगे पत्थर, पहाड़, झाड़, झंखाड़ कुछ भी आएँ, उनसे टक्कर नहीं लेती है वरन् अपनी राहों को मोड़ लेती है। जो साथ चलने को तैयार है उसको सीने से लगाकर बहा ले जाती है, जो उसे रोकना चाहते हैं, बड़ी श्रद्धा से उनके पाद प्रक्षालन करके सावधानी से पल्लू छुड़ाकर भाग लेती है। क्योंकि उसके सामने केवल एक ही लक्ष्य है और वह है सागर से मिलना। हम आत्माओं का कोई न कोई लक्ष्य तो हरेक का होता ही है, उस लक्ष्य में मन को एकाग्र करें तो बदले का भाव पैदा नहीं होगा। सबसे बड़ा लक्ष्य तो है संकल्पों की डोरी से प्रभु की समीपता पाना। उन संकल्पों को किसी से बदला लेने में लगा दिया तो प्रभु पिता बहुत दूर रह जायेंगे।

झुकना ही महानता है

स्व-परिवर्तन सामर्थ्य की, समझ की, रॉयल्टी की निशानी है। कोई दो बच्चे यदि आपस में लड़ पड़ें तो समर्थ और रायल माँ-बाप अपने निरपराध बच्चे को ही चुप रहने और माफ करने को कहेंगे। इसी प्रकार, मन रूपी बच्चा जब किसी से उलझता है तो इसे (अपने मन को), न कि दूसरे को बदलने का संकल्प करें। यही समर्थ और सहनशील महान आत्मा की निशानी है। कई बार मनुष्य देहभान के कारण यह संकल्प करता है कि मैं क्यों बदलूँ? इससे तो मुझे कमजोर समझा जाएगा। परन्तु कर्मगति हमें सिखाती है कि झुकना ही महानता है, उसी में दोनों का कल्याण है।

पंगु हो जाता है विवेक

बदला लेना संकुचित दृष्टिकोण और जिद्द की निशानी है। बदला लेने वाले का दायरा भरे-पूरे संसार में इतना सिमट जाता है कि वह दिन-रात केवल और केवल एक ही व्यक्ति के बारे में सोचता है। उस एक के चिन्तन में किसी अन्य से लेन-देन और प्रेम का व्यवहार आदि सब उपेक्षित कर देता है। बदले की भावना मनुष्य के विवेक को पंगु बनाती है। उसकी सोचने, समझने की शक्ति नष्ट हो जाती है। बदला, बदला, सोचते-सोचते उसकी सारी शक्तियाँ, सारी वृत्तियाँ, इसी एक बात पर एकत्रित हो जाती हैं। सुप्रसिद्ध नाटककार शेक्सपीयर की एक रिवेन्ज ट्रेजडी 'हेमलेट' इस बात का सशक्त उदाहरण है। नाटक के मुख्य पात्र हेमलेट के पिता की हत्या षड्यन्त्र द्वारा कर दी जाती है। इसका उसको गहरा सदमा पहुँचता है। वह पिता की हत्या का बदला लेने के लिए रात-दिन बदले की आग में जलता है, पागलों की तरह घूमता है। वह हत्यारे को मारना चाहता है परन्तु अन्तिम क्षण आते-आते उसकी सोचने की शक्ति इस कदर नष्ट हो चुकी होती है कि हत्यारे को मारने के साथ-साथ वह स्वयं भी मृत्यु का शिकार हो जाता है।

बदला अर्थात् बुराई की मांग

बदला लेना मनुष्य की मूलभूत वृत्ति के विरुद्ध है। बदले के भाव में मनुष्य में सर्व प्रथम उतावलापन आता है कि यह कार्य अभी ही हो जाए, इसी घड़ी हो जाए। वह संसार की सारी चीजों से जैसे विद्रोही भाव से लड़ने को तैयार हो जाता है। वह जड़-चेतन, धरती-आकाश सभी को अपने इशारों पर चलाना चाहता है परन्तु यह तो व्यर्थ-सा विचार है। जब वह स्वयं ही अपने अनुसार नहीं चल रहा है तो बाकी चीजें उसके अनुसार क्यों चलेंगी? बदला शब्द में दो शब्द हैं बद + ला। बद का अर्थ है बुरा, ला माना ले आओ। जब किसी से बदला लेने का भाव मन में आए तो स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि मैं बुराई मांग रहा हूँ। यह तो नासमझी कहलायेगी।

स्वपरिवर्तन महानता है

परिवर्तन जीवन है। परिवर्तन चेतनता की निशानी है। परिवर्तन संसार का सौन्दर्य है, आवश्यकता है, संसार का नियम है। संसार परिवर्तन की पूजा करता है। जो नहीं बदलता उसे जड़ समझ कर फेंक दिया जाता है। पौधे का

निरन्तर परिवर्तन उसे फूल-फलों से भरा-पूरा बना देता है। उसे देख-देख कर सभी खुश होते हैं। उसका सामीप्य सभी को प्यारा लगता है। सूखा पेड़ सभी की वितृष्णा का शिकार बनता है। हमारा आज तक का जीवन निरन्तर परिवर्तन का परिणाम है। निरन्तर विरोधी परिस्थितियों में से गुजरते हुए भी यह अपने अस्तित्व को बनाए रखने में कामयाब है। फिर हम बदलने से क्यों डरते हैं? जबकि पता है कि परिवर्तन का परिणाम सुखदायी है, तो उससे डर क्यों? स्वपरिवर्तन महानता है इसलिए बदला लेने के बजाए स्वपरिवर्तन के रास्ते को अख्तियार करें।

बदले का अन्तहीन कुचक्र

बदला लेने से बात समाप्त नहीं हो जाती वरन् बात की शुरूआत तभी होती है जब बदले की भावना का संकल्प पैदा होता है। संकल्पों की एक बड़ी सूक्ष्म मशीनरी है। जैसे रोगाणु फैलते हैं वैसे ही व्यर्थसंकल्पों और दुर्भावनाओं रूपी रोगाणु भी फैलते हैं। जिसके प्रति जो भाव इधर होता है, वही उधर भी होता है। कहा जाता है, किसी के बारे में यह जानना हो कि वह हमारे बारे में क्या सोचता है तो सर्वप्रथम हम अपने को देखें कि हम उसके बारे में क्या सोचते हैं। जब इधर दूसरे को हानि पहुँचाने का संकल्प चल रहा होगा तो उधर भी नुकसान के लिए योजना बन रही होगी। उधर की विध्वंसक घटना को रोकने के लिए हमें अपने मन में चल रही विनाशकारी योजना को रोकना होगा। नहीं तो हम किसी को एक हानि पहुँचायेंगे, दूसरा बदले में दो पहुँचायेगा। इस प्रकार, यह अन्तहीन कुचक्र चलता रहेगा और एक-एक करके सारी उज्ज्वल भावनायें, रिश्तों की मिठास, जीवन का रस इस कुचक्र में समाप्त हो जाएगा।

कानून हाथ में न लें

यह संसार कर्म और उसके फल पर आधारित है। कर्म का फल अवश्य मिलेगा। किए गए कर्म का परिणाम हर हाल में निकलता है। जैसे तरकश से निकला तीर वापस नहीं आ सकता, उसी प्रकार कर्म का परिणाम मिटाया नहीं जा सकता। फिर चाहे वह प्रभाव आज निकले या कल, प्रत्यक्ष मिले या परोक्ष, उतना ही मिले या कम-ज्यादा मिले। अब यदि किसी व्यक्ति के द्वारा किए गए कर्म का हम बदला लेना चाहते हैं तो मानो स्वाभाविक गति में हस्तक्षेप करते हैं। क्योंकि हम बदला लेने में समर्थ नहीं हैं। यह सामर्थ्य प्रभु ने

किसी को भी नहीं दिया है। परमात्मा पिता कानून हाथ में उठाने से मना करते हैं। किसी के गलत कार्यों का असली जज ईश्वर है। जैसे हम लौकिक दुनिया में यह कायदा लेकर चलते हैं कि यदि एक मनुष्य, दूसरे मनुष्य के साथ अनुचित व्यवहार करता है तो सरकार को तुरन्त सूचना दी जाए, स्वयं झगड़े को न बढ़ाया जाए। जैसे भाई-भाई आपस में लड़ पड़ते हैं तो भी नियम कहता है कि माँ-बाप को बताया जाए, वे स्वयं न्यायाधीश न बनें। माता-पिता के फैसले में दोनों का विश्वास रहे। दोनों आपस में ही उलझते हैं तो माँ-बाप के महत्त्व को नकारते हैं। इसी प्रकार, साक्षीद्रष्टा सर्वोच्च नियमज्ञ पिता परमात्मा के नियमों के अनुसार चलें, उनके नियमों को अपने हाथों में ना उठायें, साक्षी होकर कर्म करें और दूसरे के कर्मों को भी साक्षी होकर देखें तो हम हल्के रह पाएँगे।

दुख कालेन-देन बन्द करें

जबकि हम कहते हैं, सारी दुनिया अपना ही परिवार है, तो बदला क्यों और किससे? सभी भाई-भाई हैं। इस संसार में एक का सुख दूसरे पर आधारित है। समाज एक शरीर की तरह से है। जैसे शरीर के एक भी अंग में दर्द है तो शरीर को स्वस्थ नहीं माना जा सकता, इसी प्रकार, समाज के किसी एक व्यक्ति को भी दुख है तो सुखी समाज नहीं कहा जा सकता। यदि मैंने किसी को दुख दिया या मुझे किसी ने दुख दिया तो समाज में दुख की उपज हुई जिसका प्रभाव सब पर आएगा। अतः बदले को भुलाकर स्वपरिवर्तन और सहनशीलता का मार्ग अपनाएँ। इस सम्बन्ध में एक प्रेरणादायी कहानी इस प्रकार है -

ज्वालासिंह नाम का एक समुद्री डाकू था। वह और उसके साथी समुद्र में यातायात करने वाले यात्री-जहाज तथा वाणिज्य-जहाज को घेरकर लूटते थे तथा उस पर उपस्थित लोगों को भी मार डालते थे। लोग उसके नाम से ही थर-थर काँपते थे।

एक बार ज्वालासिंह अपने साथियों के साथ समुद्र में सफर कर रहा था कि अचानक भयंकर तूफान में घिरकर उसके जहाज के टुकड़े-टुकड़े हो गए। उसके साथी डूब कर मरने लगे। ज्वालासिंह जहाज के एक छोटे-से टुकड़े के सहारे तूफान की दिशा में बहने लगा। इस प्रकार वह अपने सभी साथियों से अलग हो गया। घायल ज्वालासिंह समुद्र में तैरता हुआ बेहोश हो गया।

जब उसे होश आया तो उसने अपने को बिस्तर पर

पाया। आश्चर्य में डूबा ज्वालासिंह इधर-उधर देख रहा था कि तभी कमरे में एक वृद्ध व्यक्ति ने प्रवेश किया। उसने ज्वालासिंह को बताया कि उसने ही उसकी जान बचाई है। ज्वालासिंह ने एहसान भरे शब्दों में वृद्ध व्यक्ति का धन्यवाद किया तथा उससे उसका परिचय मांगा। इस पर वृद्ध व्यक्ति ने बताया, 'मैं एक नाविक हूँ। मेरे परिवार में मैं, मेरी बीबी तथा मेरा एक लड़का था परन्तु आज केवल मैं ही रह गया हूँ।'

कारण पूछने पर वृद्ध व्यक्ति ने बताया, 'एक बार मेरी बीबी तथा मेरा बेटा एक जहाज पर सफर कर रहे थे। अचानक उस जहाज पर तुमने अपने साथियों सहित हमला बोल दिया तथा जहाज को लूटने के पश्चात् उस पर उपस्थित सभी यात्रियों को भी मार डाला, जिनमें मेरी बीबी तथा बेटा भी था।' यह सुन कर ज्वालासिंह के पाँव तले से मानो जमीन खिसक गई। आश्चर्यचकित हो, काँपते स्वर से उसने पूछा, 'जब आप यह जानते थे कि मैं आपकी बीबी और बेटे का कातिल हूँ तो फिर आपने मेरी जान क्यों बचाई? क्यों आपने मेरी इतनी सेवा की?'

'जब मैंने तुमको समुद्र में असहाय हालत में देखा तो मेरे मन में विचार आया कि यदि मैंने तुम्हें समुद्र में मरते हुए छोड़ दिया तो इससे मेरी बीबी या बेटा तो वापिस मिलने वाले नहीं हैं। जो होना था सो हो गया। यदि मैं तुम्हें समुद्र में छोड़ देता और तुम मर जाते तो तुम्हारे और मेरे में अन्तर क्या रह जाता? मैं भी तुम्हारी तरह कातिल ही समझा जाता। इसलिए मैंने तुम्हें बचाकर अपना कर्त्तव्य पूरा किया।' वृद्ध ने उत्तर दिया।

यह सुनकर ज्वालासिंह उस वृद्ध व्यक्ति के पैरों में गिरकर माफी माँगने लगा। उसने जिंदगी में फिर कभी भी किसी को दुख ना देने का वचन दिया। वह उस वृद्ध के साथ रहकर अपने कर्मों को सुधारने लगा। इस प्रकार की सेवा से वृद्ध व्यक्ति भी धीरे-धीरे अपने परिवार-जनों का गम भूल गया।

यह कहानी हमें समझाती है कि वास्तविक प्रतिशोध के लिए हम व्यक्ति को अपने गुणों से प्रभावित करें, अपने कर्मों से उसे गुणवान बनने की प्रेरणा दें। यदि कोई हमारी निन्दा करता है तो हम उसकी महिमा करें। यदि हमें कोई गाली देता है तो हम उसे गले लगायें। यदि कोई हमारा अपकार करता है तो भी हम उसका उपकार करें, यही वास्तविक प्रतिशोध है। बाबा ने भी हमें यही बताया है, 'बच्चे, निन्दा तुम्हारी जो करे, मित्र तुम्हारा सोए।'

-- ब्र.कु. आत्मप्रकाश

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के



प्रश्न- दादी जी आप कितने घण्टे बाबा को याद करते हैं?

उत्तर- बाबा मुझे याद करता है, मैं क्यों याद करूँ! मैं नहीं करती हूँ। वह याद करता है। हरेक यहाँ बाबा के घर में, बाबा की याद में बैठे हैं। बाबा ऑटोमेटिक याद करके हमारी याद को खींच रहा है। हम सभी इस बात के अनुभवी हैं ना। हम बाबा को याद नहीं करते हैं पर याद की भी खींच होती है। जैसे संगठित रूप में साइलेंस में रहना सहज है, ऐसे कामकाज करते भी यही अटेन्शन हो क्योंकि काम किसका है? यज्ञ का। सेवा चौथा सबजेक्ट है। ज्ञान क्या है? मैं कौन, मेरा कौन? ज्ञान, योग और धारणा तीनों ही हमारे जीवन को बनाने वाले हैं। हमको बाबा ने सिखाया है, हमारा काम है औरों को भी बताना। विश्व भर में सेवाये हो गयी हैं। सेवा क्या है? बाप की याद में रहना, बाप समान बनना। इसके लिए संगमयुग का समय बहुत अच्छा है, इस समय ही हम विश्व का कल्याण करने के निमित्त हैं। जो प्रभाव, झुकाव से पार हो गये हैं, ऐसों पर बाबा खुश है। मैं भी बिल्कुल खुश हूँ।

प्रश्न- स्थिति अचल-अडोल बन जाए उसके लिए क्या करें?

उत्तर- याद में रहने का स्वभाव बना लो तो स्थिति अचल-अडोल बन जाएगी। कोई-कोई अपने स्वभाव के वश हैं। मैं साक्षी हो करके आप सबको दिल से कहती हूँ, समय ऐसा है कि अपने स्वभाव के वश हो करके याद को मिस नहीं करो। बाबा की याद में प्यार भरा हुआ है। साक्षी हो करके अपनी स्थिति को अचल-अडोल बनाने का भाग्य मिला है। स्थिति को अचल-अडोल अभी बनाना है बाबा के साथ। मैं यह नहीं कह सकती हूँ कि मैं क्या करूँ! मैं नहीं कर सकती हूँ। सारे कल्प में, बाबा की याद में रहना चाहे बाबा के साथ रहना, यह अनुभव अभी कर सकते हैं। ऐसे लगता है, हम तो सब बाबा के साथ बैठे हैं! सभी यह भाग्य अनुभव कर रहे हैं। भावना से सभी बैठे हैं, तो अनुभव हो रहा है। वह अनुभव इस जीवन-यात्रा में कितना अच्छा काम आ रहा है। जीवन एक यात्रा है। यात्रा माना कोई लौकिक स्थान पर नहीं जा रहे हैं, परमधाम में जा रहे हैं, निर्वाणधाम में जा रहे हैं, जहाँ वाणी नहीं है। बाबा के साथ शान्तिधाम में जा रहे हैं, वो हमारा घर है। वन्दर है,

शिवबाबा और ब्रह्माबाबा लेके जा रहे हैं। एक स्वभाव होता है, जो हमको अपने वश में कर लेता है लेकिन अभी हम स्वभाव के वश नहीं हैं। स्वभाव ऐसा बना रहे हैं जो बाबा हमारे साथ हो। वो अलग नहीं हो सकता है।

प्रश्न- संगमयुग के संगठन की वन्दरफुल बात कौन-सी है?

उत्तर- अभी जो बाबा की याद में रहने का भाग्य मिला है, यह नेचर हो जाए। कई तो क्यों, क्या के प्रश्न पूछके इसके अर्थ को भारी कर देते हैं इसलिए ज्यादा बुद्धि नहीं चलानी है। मन-बुद्धि आत्मा में हैं। मन-बुद्धि से याद में रहना है। अगर स्मृति में यह याद समाई हुई है तो यह संगम का समय सफल है। बाबा को देख और संकल्प आता ही नहीं है, अकेला बाबा सबके संकल्पों को शान्त कर देता है। वन्दर है ना। ऐसा संसार में कहीं नहीं हो सकता है कि इतने सब इकट्ठे बैठे हुए भी शान्त रहें। इस संगम के समय ही बाबा ऐसे वन्दर दिखाते हैं। आत्मा के मन-बुद्धि का ज्ञान होने के कारण हमें ऐसा शान्त रहना इजी लगता है। शान्त मन और बुद्धि से, बाबा के साथ कनेक्शन, रिलेशन होने के आधार पर लाइट-माइट मिलती है।

प्रश्न- लौकिक पढ़ाई और बाबा की पढ़ाई में क्या अन्तर है?

उत्तर- बाबा संगम पर हमको बहुत होशियार बनाता है कमाई करने में। कदम-कदम में कमाई है। सिर्फ समय वेस्ट नहीं करना है। कुछ भी हो जाए, इसी समय अचल-अडोल बनना है। आजकल रोज़ की मुरली में इंसेंस, वरदान और स्लोगन कितने अच्छे आते रहते हैं। वही रिपीट करो, रिवाइज करते रहो तो रियलाइजेशन भी हो जायेगी। और बातें रिवाइज नहीं करो। इसके सिवाए और तो कोई काम ही नहीं है। लौकिक में यह कभी नहीं कहेंगे कि पढ़ाई में ही कमाई है। पढ़ाई पूरी होने के बाद जब जाँव लगे तब कमाई हो। पर यहाँ पढ़ाई के साथ-साथ कमाई भी है। अभी साइलेंस में बैठो तो इतना जो सब सुना है उसे

ज्ञानामृत

प्रेक्टिकल में लाना सरल हो जाए। कई पूछते हैं, सुना तो अच्छा पर प्रैक्टिकल कैसे करें? कैसे नहीं कहो, करना ही है, यह सोचो। कान से सुना, दिल को लगा और प्रैक्टिकल हो गया, अभी ऐसा पुरुषार्थ होना चाहिए।

प्रश्न- दादी जी, आपने भगवान से क्या वायदा किया है?

उत्तर- बाबा की हाज़िरी में मुझे भी हाज़िर होना है, यही बुद्धि में रहता है। पंछी और परदेशी दोनों नहीं किसी के मीत...। हरेक यहाँ परदेशी है, यह शरीर मेरा है, इस भान से भी परे हैं, इसका भान न आये। जब तक यहाँ हैं, क्या कर रहे हैं? धरती पर पांव नहीं हैं। आसमान के ऊपर हैं, कहाँ? वन्दर है। एक बाबा इतने बच्चों को अपना बनाके फिर कहता है, तुम मुस्कराते रहो, कोई मुश्किलात नहीं। हरेक आत्मा अपने-अपने शरीर में, अपना-अपना पार्ट बजा रही है। मैं आत्मा हूँ, मेरा परमात्मा है, यह बात सदा स्मृति, वृत्ति, दृष्टि में नेचुरल हो। हमने भगवान से यह वायदा किया है कि हम राजाई लेके ही छोड़ेंगे। हमारे बुलावे पर, खिंचकर ऊपर से यहाँ आया है और अभी हमको ऊपर खींच रहा है। कौन आया... मेरा परदेशी... बहुत ऊंचा उसका नाम है, ऊंचा उसका ठाँव है। यह पराया देश है। जब तक रावण माया का राज्य है, तब तक वह भी छोड़ती नहीं है लेकिन मेरे और बाबा के बीच में वह आवे, नाँट एलाऊ। कौन है जो कहे, मैंने माया को एक बार ऐसी आँख दिखाई है, नाँट एलाऊ... तो बिचारी नहीं आती है। वह आवे और हम अचल-अडोल स्थिति के तख्त पर बैठ जायें। तो इस तख्त पर माया आ नहीं सकती है। अडोल-अचल रहने का जो तख्त मिला है, यह बड़ा अच्छा है। कोई भी देह या देह के सम्बन्धी याद न आयें।

प्रश्न- दादी, आपने ऐसा कौन-सा जादू चलाया, जो आप खाली हाथ भारत से आवे थे लेकिन सारा संसार आपके सामने हाज़िर हो गया?

उत्तर- मैं थोड़े ही करती हूँ। करावनहार करा रहा है। ड्रामा कहता है, तुम देखो, कितना अच्छा हो रहा है। यह ड्रामा भी किसको भूल जाता है परन्तु मैं तो कुछ नहीं करती हूँ। लव, पीस, हैपीनेस – यह पाँवर काम कर रही है। कराने वाला सबसे करा रहा है। हम न्यारे हैं तो उसको प्यार करने के लिए फ्री रहते हैं। बाबा मुझे प्यारा बनाता है, औरों को प्यार करने के लिए। जैसे वो खुद न्यारा है ऐसे न्यारे बन जाओ, ऊपर रहो तो यह काम भी बाबा करेगा। तो कभी नहीं कहो कि तुमने यह किया, मैंने कुछ नहीं किया। सिर्फ

सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। उसने मेरे को भेजा है।

आज सारी दुनिया दादी प्रकाशमणि को याद कर रही है क्योंकि सभी दादी को जानते थे। मैंने भी दादी को इमर्ज किया, दादी ने प्रकाश की मणि का पार्ट बहुत अच्छा बजाया। दादी और दादी ने जयंती बहन के कहने अनुसार ही मुझे विदेश सेवा के लिए साथी के रूप में निमित्त बनाया। जयंती बहन पक्के नियमों पर चलने वाली, इम्पासिबुल को पॉसीबुल कर दिखा रही है। ये जो नियम बाबा ने बनाके दिये हैं, 100 परसेन्ट पवित्रता के साथ खाना, पहनना, रहना – ये वन्दरफुल हैं।

टेन्शन फ्री रहना अच्छा लगता है। बाबा ने एक बार कहा, टेन्शन के आगे ए दे दो तो अटेन्शन हो जायेगा। कहाँ-कहाँ से प्लेन से सब आते हैं परन्तु मुझे तो प्लेन बुद्धि लेके आती है। अनुभवी ही जाने इस सुख को। यह समझने के लिए कोई पढ़ा-लिखा नहीं चाहिए और ना ही कोई डायरी पेन की जरूरत है। हाथ खाली हैं, जब भी खाली है, फिर भी उड़ते रहते हैं ऊपर में। ऊपर उड़ने के लिए प्लेन यहाँ खड़ी है। बाबा कहता है, तुम सिर्फ 'हाँ' कहो, तो बाबा ले जायेगा।

आजकल हम भी देखते हैं, दृष्टि का महत्व है। हर एक का पार्ट ड्रामा में अपना-अपना है। मैं अपने पार्ट को देख बाबा को कहती हूँ, बाबा, मुझे वीजा नहीं मिल रहा है। कहाँ का? हमारे जो पूर्वज हैं, सब बैठ गये हैं ऊपर जाकर। मुझे यहाँ छोड़कर गये हैं। अच्छा लगता है, इतने सब और बच्चे दुनिया से न्यारे बाबा के प्यारे बनकर अपना पार्ट बजा रहे हैं। न्यारा बनना हमारा काम है, प्यार की शक्ति देना बाबा का काम है। कोई-कोई आत्मायें निमित्त मात्र यहाँ शरीर में हैं परन्तु देह से न्यारी और उपराम वृत्ति में रहते अन्य आत्माओं को भी रास्ता दिखाने की गुप्त सेवा कर रहे हैं।



दो बातें अपने अंदर पैदा कर लो, एक तो चुप रहना और एक माफ करना। चुप रहने से बड़ा कोई जवाब नहीं और माफ कर देने से बड़ी कोई सजा नहीं



एक पत्र

वरिष्ठ नागरिकों के नाम

ब्रह्माकुमारी सुमन, जानकीपुरम, लखनऊ (उ.प्र.)

जीवन को जीत के अन्दाज में, ध्येय की दिशा में, समय के पहियों पर, अनुभवों के अनेक खजानों से भरपूर करते हुए कामयाबी की मंजिल तक बड़ी सहजता से पहुँचाने के बाद अब सुकून के ट्रैक पर आ पहुँचे मेरे आदरणीय भाइयो...

आज हरेक व्यक्ति बिना लक्ष्य के भाग रहा है। जाना कहीं और चाहता है और पहुँच कहीं और रहा है। बाद में वापस लौटने की न तो हिम्मत रहती है और न ही निश्चिन्तता। कौन देगा उन्हें सही दिशा? ये हमारे ही चिन्तन का विषय नहीं है, ये आज वक्त की मजबूरी बनता जा रहा है।

अनुभव, संजीवनी से कम नहीं

आप लोगों को कई बार, कई स्थानों पर एक साथ समूह के रूप से एकत्र हुए, फ्री बैठे देखा तो आपकी विशिष्टता का ख्याल आया कि क्यों न आपसे एक निवेदन कर लिया जाए और अपने भावों को आपके समक्ष रखने के लिए कलम का सहारा लिया। भाइयो, एक बार हमने सेवानिवृत्त चुनाव आयुक्त टी.एन.शेषन जी का इन्टरव्यू पढ़ा था, जिसमें उनसे पूछा गया था कि अब अवकाश के बाद क्या करेंगे? उन्होंने बड़ी संजीवनी एवं बेबाकी से जवाब दिया था कि मेरे पास अच्छी नस्ल के चार कुत्ते हैं, मैं उनकी सेवा करूँगा। यह अच्छी बात है कि हर किसी को, कुछ समय बेजुबान प्राणियों की भी सेवा करनी चाहिए। परन्तु मेरा कहने का भाव यह है कि टी.एन.शेषन जैसा विद्वान, मनोबल का धनी, दृढ़ प्रतिज्ञ और असूलों वाला व्यक्ति अगर मानव-सेवा में लग जाता तो कितनों का कल्याण हो जाता! ऐसे ही आप लोग भी एक-एक व्यक्ति

नहीं, अनुभवों का भण्डार हैं, आपको किसी कॉलेज में पढ़ाने की जरूरत नहीं है। अपने अनुभवों को, युवा जगत को सिर्फ कहानी की तरह ही सुनाएँ, तो भटकते हुए नौनिहालों के लिए यह किसी संजीवनी से कम नहीं होगा।

जिसने भी जीवन के 60 वसंत पार कर लिए उसने कुछ और कमाया हो या ना कमाया हो पर अनुभवों का धनी तो वह होता ही है। इस धन को संसार की किसी भी दौलत से खरीदा नहीं जा सकता। अनुभव अनमोल हैं। आप सभी अनमोल खजानों से संपन्न हैं। जीवन की किताब में, कर्म की कलम से आपने जिन अनुभवों को समाया है, वे न सिर्फ पढ़ने योग्य हैं बल्कि पथभ्रमित, कर्तव्य से विमुख युवाओं के बहकते कदमों व फिसलते मन को दिशा देने में भी सक्षम हैं।

अन्तिम पड़ाव को बनाइये उत्तम ठहराव

बचपन की चंचलता को छोड़, उतावली-जोशिली तरुणाई तथा रोबीले एवं दंभ भरे युवाकाल को पार करके अब जीवन की गाड़ी ऐसे पथ पर आ पहुँची है जहाँ धैर्य है, सब्र है, सन्तुष्टि है। जिन्दगी के इस चौथे आयाम को आप बड़े आनन्द व स्थिरता के साथ जी रहे हैं। जिन्दगी के एक सबसे जरूरी व अहम काम को आपने अपनी इसी अवस्था के लिए ही छोड़ रखा था। उस कार्य के लिए सभी के मन में यही आता है कि इसके लिए बेहद एकाग्रता एवं निश्चिन्तता की जरूरत पड़ेगी इसीलिए जब समस्त जिम्मेदारियों से मुक्त हो जायेंगे तभी करेंगे। वह महत्वपूर्ण कार्य है आध्यात्मिक ज्ञान लेने का। हमारी ऐसी विचारधारा इसलिए बनी क्योंकि पुराने जमाने में हर बात में निश्चिन्तता होती थी जैसे कि बच्चा पैदा हुआ तो बुढ़ापे की लाठी बनेगा ही, बच्ची की शादी कर दी तो वह सुखी रहेगी ही। अकाले मृत्यु या लाइलाज बीमारियाँ तो होती ही नहीं थी। इसलिए 60 वर्ष के बाद निश्चिन्तता मिल जाती थी परन्तु आज तो चिन्ताओं की बड़ी-बड़ी चिताएँ चारों ओर लगी पड़ी हैं इसलिए आध्यात्मिक ज्ञान की कदम-कदम पर अत्यंत आवश्यकता

पड़ रही हैं। फिर भी आपके लिए सुनहरा अवसर इसलिए है कि आप अपने सभी उत्तरदायित्व पूरे कर चुके हैं इसलिए इस अन्तिम पड़ाव को अति उत्तम ठहराव बना लीजिए।

मन के स्वास्थ्य के लिए कौन-सी ठोस योजना बनाई?—

संसार को अपने बेहतरीन अनुभवों की सौगात देकर, नई पीढ़ी रूपी पौध में श्रेष्ठ संस्कारों का रोपण करते हुए उनके चरित्र को आप कुन्दन की तरह चमका सकते हैं। जिस प्रकार शारीरिक स्वास्थ्य के लिए सैर करना बहुत जरूरी है उसी प्रकार शरीर को चलाने वाले मन को भी स्वस्थ रखना जरूरी है। क्या उसके लिए कोई ठोस योजना बनायी है, क्या कोई श्रेष्ठ कदम उठाया है? मेरे भाई, जिस अवसर के इन्तजार में 60 वर्ष बीत गये, अब उस इन्तजार को पूर्ण विराम लगाना ही होगा। यह कीमती वक्त, जो 60 वर्षों के इन्तजार के बाद आया, कहीं किसी वरिष्ठ नागरिक क्लब में खेलते हुए पास न हो जाये, या किसी मंदिर के चबूतरे पर घण्टे-घड़ियाल की टंकारों में हँसी-मजाक की तासीर मिलाकर प्रसाद बाँटने में न गुजर जाये, या फिर किसी पार्क की चौपाटी में चार लोगों की चौकड़ी के बीच राजनीति पर बाँउसर फेंकते या क्रिकेट में नो बॉल पर फ्री हिट मारते न गुजर जाये।

साथ जाने वाली दौलत कितनी है? —

जीवन के इस दौर में अगले जन्म के लिए भी निवेश करना है। पीछे की जिन्दगी तो स्वयं और परिवार को चलाते, सामाजिक उठा-पटक की दौड़-धूप में गुजर गई। जो कमाया वो या तो खाने में गया या मौज-मस्ती में गया। जो कुछ बचा वो या तो बाल-बच्चों के लिए विरासत में छोड़ जायेंगे या फिर नाती-पोतों के मनोरथ पूरे करने में लगा देंगे। यहाँ पर शास्त्रों की बात भी ध्यान पर रखनी चाहिए कि 'पूत सपूत तो क्यों धन संचय, पूत कपूत तो क्यों धन संचय।' आज आप जहाँ हैं, वहाँ बहुत सुख-सुविधाएँ हैं परन्तु जहाँ जाकर बिल्कुल नये तरीके से जीवन शुरू करना है, उस आने वाले अगले जन्म के लिए आप क्या साथ ले जायेंगे? कभी-कभी किसी दूसरे शहर में दो या तीन दिन या एक सप्ताह के लिए जाना होता है, तो भी कितने दिन पहले से ही तैयारी करने लगते हैं। यदि मुहल्ले में भी चार घर छोड़ किसी के यहाँ जाना हो, तो भी कुछ

तैयार होकर या तैयारी करके ही जाते हैं। परन्तु जहाँ हमेशा के लिए जाना है, बिना निर्धारित तिथि व समय के जाना है, उसके लिए कौन-सी तैयारी की है? वहाँ तक



जिन्दगी तो स्वयं और परिवार को चलाते, सामाजिक उठा-पटक की दौड़-धूप में गुजर गई। जो कमाया वो या तो खाने में गया या मौज-मस्ती में गया। जो कुछ बचा वो या तो बाल-बच्चों के लिए विरासत में छोड़ जायेंगे या फिर नाती-पोतों के मनोरथ पूरे करने में लगा देंगे। यहाँ पर यादगार शास्त्रों की बात भी ध्यान पर रखनी चाहिए कि 'पूत सपूत तो क्यों धन संचय, पूत कपूत तो क्यों धन संचय।'

साथ जाने वाली दौलत कितनी है? क्योंकि यहाँ की दौलत कितनी भी रखी हो, साथ जा ही नहीं सकती। वहाँ ये दौलत तो क्या, यह शरीर भी नहीं जाने वाला।

एक माता जी ने अपने दोनों दाँतों में छेद करवा करके उनमें सोना फिक्स करवा लिया था। हमने जब पूछा तो बड़े गर्व से कहने लगी कि मेरे मरने के बाद भी इसे कोई निकाल नहीं सकता। कोई निकाल नहीं सकता, तो क्या हुआ, साथ भी तो नहीं जा सकता। दाँत साथ जायेंगे क्या? तो पुण्य की पूँजी आखिर कौन-सी साथ जायेगी और क्या वो हमने जमा कर ली है?

दोनों हाथों से पुण्य की पूँजी बचाएँ —

मेरे भाई, जीवन में आपने क्या किया? कितना किया? उसका हिसाब भले ही निकालो लेकिन अभी तो सिर्फ निवेश का ही समय है। इसे बड़ी संजीदगी से सफल कर लें। अगर अभी तक नहीं भी किया है तो भी कुछ वक्त तो अभी हाथ में है, उसमें ही कर लीजिए। अन्तिम यात्रा के पहले आत्मा की उन्नति की यात्रा कर लें। निवेश का यह

बेहतर समय भी मजबूरियों का वर्णन करने में ही न चला जाये अथवा वर्तमान का आनन्द, भूत की परछाई को पकड़ते-पकड़ते ही न बीत जाये। इसलिए दोनों हाथों से पुण्य की पूँजी की बचत करें। समय का सदुपयोग कर अपना वर्तमान और भविष्य उज्ज्वल एवं समृद्ध बनायें। जिम्मेवारी एवं चिन्ताओं से मुक्त, बोनस के रूप में मिले इस समय में आप अपने परिवार में भी पुण्य का प्रताप स्पंदित कर सकते हैं। यह परमात्मा के साथ रहने का समय है।

भगवान दे रहा है दस्तक भाग्य के दरवाजे खोलने की

वो सब तो कर लिया जिसकी अभी तक जरूरत थी, अब वो करना है जो बच गया है या जो बहुत-बहुत-बहुत आवश्यक है। अपने थके और पुराने हो चले मन को परमात्म प्राप्ति की ऊर्जा से नवीन कर लें। अवसर का लाभ उठायें। जीवन को परमात्म साथ से आनन्दमय बनायें। मन को प्रभुप्रेम में सराबोर कर जिन्दगी के हर कर्म को यादगार बनायें।

मेरे भाई, संसार की दशा व दिशा बदलने के लिए संसार का मालिक पिछले 82 वर्षों से नये विश्व का सृजन करने आ चुका है और नवयुग के लिए उसे चाहिएँ श्रेष्ठतम् और सुयोग्य नागरिक, जिनको वह बड़े करीने से तैयार भी कर रहा है। मौजूदा जिन्दगी की शाम की दस्तक के पहले ही भावी जीवन की सुबह को सौभाग्य से भर लें। भगवान हमारी तकदीर लिखने की कलम हमारे ही हाथ में थमा रहा है। जरा गौर करें! कौन-सा समय आ गया है। आपका भाग्य, आपका इन्तजार कर रहा है। भगवान भाग्य के दरवाजे

खोलने की दस्तक दे रहा है। समय की पुकार को सुनो, अपने अन्तःकरण पर ध्यान दो। पहचानो अपने आपको, न खाली हाथ आये थे, न खाली हाथ जायेंगे, तो क्या जायेगा? शरीर तो साथ में जाता नहीं तो क्या जायेगा? उस अविनाशी परम सत्ता के साथ अविनाशी आत्मा का रिश्ता जान लें, पहचान लें और इसे जोड़कर अनमोल अथाह अविनाशी प्राप्तियाँ कर लें अर्थात् राजयोग सीख अपने वर्तमान और भविष्य के नसीब को बेनजीर बना लें। यही साथ जाएगा।

संसार ले प्रेरणा आपसे

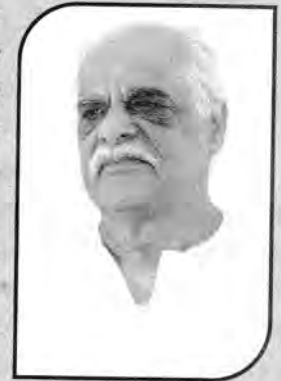
यह तो निश्चित है कि हमें मिलता है वही जो हमने अपने डीड में लिखा है। सृजन नये युग का चल रहा है, परमात्म साथ एवं परमात्म याद से अपने अन्त को भावी आदि के लिए ऐसा तैयार कर लें कि जाने के समय भी संसार आपसे प्रेरणा ले और आपको नाज हो अपने आप पर, अपने भाग्य पर और अपने भविष्य पर। शिकन होगी, न शिकायत ही होगी क्योंकि भाग्यविधाता के सानिध्य से भाग्य के भण्डारे भरपूर करके जा रहे हैं। मेरे भाई, समय की चुनौती, शरीर की चेतावनी, माया का चक्रव्यूह, परिस्थितियों का चक्रवात, विज्ञान की चतुराई, व्याधियों की चंचलता और मन की चपलता, अब आपके विवेक-चक्षु को, चापलूसी की चाशानी में डुबो कर चिन्ताओं की चैन न लगा दे इसलिए उठो, चलो, परमात्मा पिता को अपना अभिन्न साथी बनाकर नए पथ पर, सुहाने सफर के लिए, नई ऊर्जा बिखरने और नई शुरुआत करने। ■■■

श्रद्धांजली

प्राण-प्यारे बापदादा के अति स्नेही, यज्ञ के आदि-रत्न, दादा लेखराज कृपलानी (ब्रह्मा बाबा) के लौकिक सुपुत्र दादा नारायण कृपलानी ने दिनांक 6 अगस्त, 2018 को पार्थिव-देह त्याग, बापदादा की गोद ली। आपका जन्म 10

अक्टूबर, 1926 को हुआ। आप 92 वर्ष के थे।

दादा लेखराज कृपलानी (ब्रह्मा बाबा) ने सन् 1936 में हीरों का व्यापार छोड़ जब ओममण्डली की स्थापना की तब आप स्कूल के विद्यार्थी थे। बाद में जब ओममण्डली, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में रूपान्तरित हो गई और देश विभाजन के बाद भारत में स्थानान्तरित हो गई तब दादा नारायण कृपलानी मुम्बई में जा बसे। मुम्बई में ही आपने अन्तिम श्वास ली। ब्रह्मा बाबा (दादा लेखराज) की साकार याद दिलाने वाले दादा नारायण जी को सम्पूर्ण दैवी परिवार भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करता है।



घृणा से परहेज

■ ■ ■ ब्रह्माकुमारी उषा, साँढाढाला, जटहीपोखरा, छपरा (बिहार)

कि सी भी मानव के लिए घृणा विष-तुल्य है। अगर किसी चीज से घृणा आती है तो उसका प्रभाव सारे अंगों पर पड़ता है। यह एक कलुषित भावना है जो मन को हिला देती है। उस समय हमारी बुद्धि शिथिल हो जाती है और खुशी गुम हो जाती है। सड़ी-गली चीजों को देखकर घृणा आती है लेकिन हम यह समझें कि वे सड़ी-गली चीजें पौधों में डालने से वे लहलहा उठते हैं, उनमें हरियाली आ जाती है। फिर उनमें बड़े-बड़े फल लग जाते हैं। घृणा करने वाला मानव भी उन फलों को खाकर खुश होता है। अतः घृणा करने के बजाय उन चीजों का दीर्घकाल में सदुपयोग देखें। कमल के फूल कीचड़ में ही तो जन्मते हैं, फिर भी वे कितने न्यारे और प्यारे होते हैं जो सबके दिल को खुश कर देते हैं।

घृणा से व्यर्थ विचारों की उत्पत्ति

घृणा गली-सड़ी चीज से नहीं, व्यक्तियों से भी हो जाती है। कई बार किसी कुरूप व्यक्ति पर नजर पड़ जाती है तो रास्ते चलते व्यक्ति के मन में घृणा का भाव पनप जाता है। सोचने लगता है कि आज का दिन ठीक नहीं होगा। मनोनुकूल काम की सिद्धि नहीं होगी। मन में कई तरह की दूषित भावनाएँ जागृत होने लगती हैं। व्यर्थ विचार मन में दौड़ने लगते हैं। बुद्धि ठीक से काम नहीं करती है। स्थिति डमगम हो जाती है। ऐसा व्यक्ति किसी दुर्घटना का शिकार हो सकता है और फिर उस कुरूप व्यक्ति को कोसना शुरू कर देता है कि यात्रा के समय उस कुरूप और निम्न जाति वाले के दर्शनों से ही मेरा यह हाल हुआ है। उसके दर्शनों से अन्य बहुतों का भी मेरी तरह ही हाल हुआ होगा। वह इस संसार में नहीं होता तो अच्छा रहता।

उसका यह घृणा भाव उसके जीवन का अंग बन जाता है। जीवन भर उस कुरूप व्यक्ति को देखकर स्वयं असंतुलित होता रहता है। उसे देखते ही अच्छी बातों की सोच उड़ जाती है। वह यह नहीं सोचता कि सुन्दर और कुरूप होना यह तो प्रकृति की देन है।

विचारों की सुन्दरता देखें

गर्म देशों के वासी काले होते हैं जबकि ठंडे देश वाले गोरे। सुकरात बहुत कुरूप व्यक्ति था। लोग उसकी खिल्ली उड़ाया करते थे लेकिन वह विश्व में एक बहुत बड़े दार्शनिक के रूप में

जाना जाता है। अतः हम आवरण की सुन्दरता ना देखें, विचारों की सुन्दरता देखें। हमें तो किसी के विचारों और वाणी से लाभ उठाना है, सुन्दर-कुरूप से क्या प्रयोजन?

घृणा, क्रोध की जनक

ऐसे लोग घृणा का भाव अपनी आने वाली पीढ़ी को भी दे जाते हैं। इससे वे योग्य नागरिक नहीं बन पाते। घृणा से उमंग-उत्साह खत्म हो जाता है। यह एक संक्रामक बीमारी है। ज्ञानहीनता के कारण यह हममें प्रवेश करती है। सत्य-असत्य की परख न कर पाने के कारण घृणा उपजती है। घृणित वस्तुएँ तो फिर भी ज्यों की त्यों बनी रहती हैं। फिर हमारी घृणा का फायदा क्या? राजयोग में घृणा बहुत बड़ी बाधक है। योग के समय जब घृणित वस्तु याद आती है तो शिवबाबा की याद उठरती नहीं है। ज्ञान-मंथन द्वारा ही हम घृणा से छुटकारा पा सकते हैं। घृणा, क्रोध जैसे भूत को भी जन्म देती है। घृणित वस्तु पर क्रोध आना शुरू हो जाता है। पाँच विकारों के बाद छठा विकार घृणा भी है। जैसे योग से हमारे विकार भस्म हो जाते हैं वैसे ही ईश्वरीय ज्ञान और योग से घृणा का भी विनाश हो जायेगा और हम उड़ते पंछी बन जायेंगे।

जाति-धर्म के जाल में न फँसें

कई मानव डरावनी और घोर अंधियारी रात्रि से घृणा करते हैं लेकिन नहीं, रात्रि भी कल्याणकारी है। दिनभर काम करते-करते कर्मोन्धियों की शक्ति क्षीण हो जाती है। रात्रि के विश्राम के बाद ये चैन का अनुभव करने लगती हैं। रात्रि में आराम करने से इनमें नयी शक्ति भर जाती है अतः रात का आना जरूरी है। समाज में उच्च जाति और नीच जाति के भेद का बोलबाला मजबूती से अपने पैर जमाए हुए है जिस कारण एक मानव दूसरे मानव से काफी घृणा करता है। घृणा किसी को भी सुख-शान्ति से जीवन व्यतीत नहीं करने दे रही है। यदि बुद्धि में यह ज्ञान बैठ जाये कि सभी मानव एक जैसे हैं। जाति और धर्म तो हमारे द्वारा निर्मित जाल है, जिसमें फँसकर हम खुद परेशान हो रहे हैं।

हर इंसान एक परमात्मा की संतान है। इस बेहद की सोच से जातीय घृणा दूर होगी और भाईचारे का भाव पनपेगा। घृणा ने समाज के प्रेम को लूट लिया है तथा समाज को बिखेर दिया है। इसने हिंसा, तनाव, बैर, अनेकता, ईर्ष्या और बदले की भावना को फैला दिया है।

घृणा एक डाकू है जिसने समाज से मानवता को लूट कर दानवता का राज्य कायम कर दिया है। घृणा भाव एक बोझ है। यह आत्मा का शोषण कर इसे कमजोर बना देता है तथा उड़ने वाले पंखों को तोड़ डालता है। अतः घृणा त्याज्य है। आइये, प्रतिज्ञा करें, किसी व्यक्ति या वस्तु से कभी घृणा नहीं करेंगे। ■

माँ दुर्गा की कहानी

■■■ ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन



महर्षि व्यास द्वारा रचित अनेक पुराणों में एक पुराण है श्रीमद्देवीभागवत पुराण, जो माँ दुर्गा की उत्पत्ति और उसके कर्तव्यों की रोचक गाथा है। इसमें बताया गया है कि एक समय सृष्टि पर महिषासुर नाम का एक राक्षस था, जिसका आधा शरीर असुर जैसा और आधा भैंस जैसा था। उसने कठोर तपस्या करके ब्रह्मा जी से यह वरदान पा लिया कि कोई भी देव, दैत्य या मानव उसे मार नहीं सके, कोई स्त्री ही मुझे मारे। उसे ये भ्रम था कि जो स्वयं अबला है, वह मुझे मारने में समर्थ कैसे हो सकेगी?

दुर्गा अर्थात् दुर्गुणनाशनी

अमर होने के अहंकार में आकर उसने देवताओं को सताना प्रारम्भ कर दिया। सभी देवताएँ दया की गुहार लेकर ब्रह्मा जी के पास पहुँचे। ब्रह्मा जी, शंकर जी तथा विष्णु जी के पास पहुँचे। विष्णु जी की राय से सभी देवताओं के सम्मिलित तेज से एक नारी-रत्न की उत्पत्ति हुई जिसे नाम मिला दुर्गा। दुर्गा अर्थात् यज्ञ रूपी दुर्ग की रक्षा करने वाली, दुर्गुणों का नाश करने वाली, दुर्गम कार्यों को सरल करने वाली तथा दुर्गति का नाश करने वाली।

असुरों से देवी का युद्ध

सभी देवताओं ने देवी को अलग-अलग आयुध प्रदान किये और आभूषणों से भी अलंकृत किया। जब वे

सज-धज कर विराजमान हुईं तो त्रिलोकी को मुग्ध करने वाले उनके दिव्य-दर्शन पाकर देवताएँ उनकी स्तुति करने में संलग्न हो गये। अजन्मी भगवती ने तभी अपने मुख से वाणी निकाली जिसे सुन महिषासुर का सिंहासन हिलने लगा। उसने अपने असुर साथियों को इस आवाज़ का पता लगाने भेजा। जब उन असुरों ने बताया कि यह आवाज़ एक सुन्दरी देवी की है तो उसने विवाह का प्रस्ताव देकर अपने असुरों को देवी के पास भेजा। देवी के विवाह से मना करने पर उन्होंने देवी से युद्ध किया और मारे गये। वे असुर देवी को महिषासुर की सेवा करने के लिए मनाते रहे, उसके रूप की महिमा करते रहे पर देवी ने एक-एक कर उन सभी को मौत के घाट उतार दिया।

देवी के कर्तव्य की यादगार नवरात्रे

इसके बाद महिषासुर स्वयं आया और देवी के साथ बड़ी लुभावनी बातें करने लगा। परन्तु देवी ने उसे युद्ध के लिए ललकारा और वह भी मारा गया। इन असुरों से युद्ध करते-करते नौ दिन बीत गये, इसलिए भक्तिमार्ग में नवरात्रों का त्योहार इसी कर्तव्य की याद में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। कहा गया है कि कलियुग का नाश माँ दुर्गा ने किया। कलियुग नाश का अर्थ है कलियुग में उपस्थित राक्षसी वृत्तियों का नाश। इनके नाश के बाद ही देवी वृत्तियों का युग सतयुग आया।

नवरात्रे वर्ष में दो बार

भारत में जितने भी देवता या अन्य महात्मा हुए हैं उन सबका यादगार दिवस वर्ष में एक बार मनाया जाता है परन्तु देवी दुर्गा के निमित्त नवरात्रे वर्ष में दो बार मनाये जाते हैं। इससे देवी के अवतार लेने और कर्तव्य करने की महिमा अन्यों की भेंट में द्विगुणित हो जाती है। साल में दो बार आने वाले नवरात्रे हमें प्रेरित और जागरूक करते हैं कि सृष्टि की रक्षक, पालक और मार्ग-दर्शक माँ के बारे में हम अधिक-से-अधिक जानें, उनके गुण और कर्तव्यों को पहचानें, उनका अनुकरण करते हुए आसुरी वृत्तियों का नाश करें।

कुमारी भी और सुहागिन भी, कैसे? —

परन्तु ऐसी अलौकिक माँ दुर्गा को क्या हम जानते हैं? उनके बारे में कितना जानते हैं? वे कौमार्य व्रतधारी हैं। अखण्ड ब्रह्मचारिणी हैं। किसी भी आसुरी वृत्ति-दृष्टि के वार से सर्वथा अछूती हैं। उनके यादगार दिवस के उपलक्ष्य में कुमारी पूजन, कुमारी भोजन और कुमारी सम्मान आयोजित होते हैं। ब्रह्मचारिणियाँ उनसे अखण्ड पवित्रता के वरदान की याचना करती हैं। इतना सब होते हुए भी वे अखण्ड सुहागिन भी मानी जाती हैं। सुहाग के सभी चिह्न – सिंदूर, टीका, लाल जोड़ा, चूड़ियाँ, बिछुए, नथ, आभूषण आदि वे धारण करती हैं और संसार की सुहागिन स्त्रियाँ उनसे अखण्ड सुहाग का वरदान भी माँगती हैं। ये दोनों बातें एक साथ कैसे? कुमारी भी और सुहागिन भी? फिर उनका पति कौन है? श्रीलक्ष्मी जी के साथ श्रीनारायण और श्रीसीता के साथ श्रीराम दिखाये जाते हैं परन्तु देवी दुर्गा के साथ किसी भी देवता का नाम नहीं लिया जाता है। मन्दिर में भी वे शेर पर सवार, नितान्त अकेली और चित्रों में भी ऐसी ही चित्रित की जाती हैं। उनकी शादी कब, किसके साथ हुई, इसका भी कोई वृत्तान्त पढ़ने को नहीं मिलता है, तो इस गूढ़ पहेली का उत्तर क्या है? कोई एक साथ कुमारी भी और सुहागिन भी कैसे हो सकती है?

कन्याओं-माताओं की ईश्वरीय कार्य में लगन —

वास्तव में इस गूढ़ राज को समझने के लिए बहुत शुद्ध, दिव्य और एकग्र बुद्धि की ज़रूरत है। काल-चक्र घूमते-घूमते सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग को पार करते-करते जब कलियुग के अन्त में आ पहुँचता है तो सृष्टि में अनेक प्रकार की आसुरी वृत्तियाँ बढ़ चुकी होती हैं। इसके कारण हाहाकार करती मानवता किसी ईश्वरीय शक्ति की बाट जोहने लगती है। तब परम दयालु, कृपालु, भक्त-वत्सल, करुणामय, दाता, दिलवाले भगवान शिव धरती पर अवतरित होते हैं एक साधारण मानवीय तन में और उनको नाम देते हैं पिताश्री ब्रह्मा। ब्रह्मा बाबा के वृद्ध तन में बैठकर जब वे ज्ञान-गंगा बहाने लगते हैं तो आसुरी वृत्तियों से आहत अनेक नर-नारी उनकी शरण लेने लगते हैं और जीवन को निर्विकार बना लेते हैं। उनमें भी माताएँ और कन्याएँ अधिक लगन से इस कार्य में संलग्न हो जाती हैं। कन्याएँ आजीवन ब्रह्मचर्य-व्रत की दृढ़-प्रतिज्ञा लेकर भगवान शिव को ही अपना पति मानकर उन पर न्यौछावर

हो जाती हैं। विकारों से आच्छादित कलियुग रूपी घोर रात्रि में ये कन्याएँ काम-क्रोध आदि असुरों को संसार से समाप्त करने और शान्ति, प्रेम, भाईचारा स्थापन करने में निरन्तर युद्धरत रहती हैं। इसका परिणाम निकलता है सतयुग रूपी सूर्योदय। तब जड़-चेतन सहित सारा संसार इनकी जय-जयकार करता है और अगली चतुर्युगी में, ब्रह्मा की रात्रि में इनके इस संगमयुगी कर्तव्य की महिमा दुर्गा तथा अन्य देवियों के रूप में गाई जाती है।

कालों के काल महाकाल का वरण —

ये ब्रह्माकुमारी कन्याएँ, जो अपनी सर्व लौकिक पहचान मिटाकर, आत्म-रूप स्वीकार कर विश्व-सेवा में रत हो जाती हैं, अखण्ड ब्रह्मचारिणी भी हैं परन्तु साथ-साथ कालों के काल महाकाल शिव का वरण करके अखण्ड सौभाग्यवती और सुहाग-भाग्य का दान करने वाली भी बन जाती हैं। चूँकि दुर्गा इन्हीं के संगमयुगी कर्तव्यों की यादगार है इसलिए उसे कुमारी भी और सुहागिन भी दिखाया जाता है। ब्रह्माकुमारियाँ एक शिव को ही अपना सारा संसार समझ कर विकारी संसार से उपराम हो जाती हैं। शिव को ही पति और भरतार स्वीकार करती हैं परन्तु शिव तो निराकार, बिन्दु-रूप, ज्योति-स्वरूप हैं। वे विचित्र हैं (बिना चित्र, शरीर रहित)। उनका चित्र खींचा नहीं जा सकता इसलिए माँ दुर्गा सुहागिन होते भी मन्दिर में अकेली दिखाई जाती हैं। कोई देहधारी देवता उनके संग नहीं होते। इस प्रकार वे कुमारी भी हैं और अखण्ड सुहागवति भी। उनके सुहाग भगवान शिव के तो काल भी अधीन है। ऐसे अमर, अविनाशी पति को वरने वाली माँ दुर्गा सदा सुहागिन है और मनसा-वाचा-कर्मणा अखण्ड ब्रह्मचारिणी भी।

देवी की पूजा करते भी देवी जैसे गुण सम्पन्न क्यों नहीं बन पाए? —

किसी की वास्तविक जीवन कहानी को जानने से उन जैसा बनने की प्रेरणा मिलती है। कहानी जाने बिना मात्र हाथ जोड़ लेना, कुछ फूल-पत्र आदि चढ़ावा चढ़ा देना केवल गुड़ियों की पूजा या खेल बनकर रह जाता है। जैसे यदि कोई बच्चा यह न जानता हो कि बापू गाँधी कौन थे, कब हुए, उन्होंने क्या किया तो वह भावना वश उनके चित्र पर माला तो अर्पण कर देगा परन्तु उनके चरित्र के उदात्त गुणों जैसे – सत्य, अहिंसा, वैश्विक प्रेम आदि का चिन्तन नहीं कर पायेगा

फलस्वरूप उन्हें अपने चरित्र में भी नहीं उतार पायेगा। हमने भी अपने परिवार और समाज के बड़ों द्वारा बनाई रीति-रस्म अनुसार माँ दुर्गा पर अपनी भावनाएँ तो अर्पित की परन्तु उनके जीवन में समाए त्याग, तप, सेवा, समर्पण, अनासक्ति आदि का दिग्दर्शन न कर पाये। इसलिए हर साल पूजा-व्रत, यात्रा करते भी हम वहीं हैं, जहाँ ये सब करने से पहले थे।

देवी की पूजा करते भी हम देवी जैसे गुण-सम्पन्न क्यों नहीं बन पाये, उसका एक कारण यह भी है कि हमें देवी बहुत ऊँची, बहुत पवित्र और बहुत महान लगती है। उसकी भेंट में अपना जीवन तुच्छ, स्वार्थी और विकारों से भरा हुआ लगता है। तब विचार आने लगता है कि हम तो इतनी ऊँचाई पा ही नहीं सकते, यह तो सम्भव ही नहीं है। कहाँ देवी और कहाँ हम!

परन्तु यदि हमें ज्ञात हो जाये कि देवी इस ऊँचाई को छूने से पहले एक साधारण कन्या ही थी। उसने कौमार्य जीवन में ही परमात्मा की शिक्षाओं को धारण कर, उसकी आज्ञाओं पर चल, उसके समान बनने का दृढ़-संकल्प कर लिया। एक-एक कदम उठाते, गुणों को धारण करते इतनी ऊँचाई तक पहुँच गई। इस जानकारी के बाद उन जैसा बनने की हिम्मत और उमंग सहज ही आ जाता है और यह सम्भव भी लगने लगता है।

जैसे एक नन्हा बालक जब स्कूल में जाने लगता है तब शिक्षक भी उसे बहुत ज्ञानी, विद्वान और समझदार लगता है परन्तु जब उसे बताया जाता है कि यह शिक्षक भी आपकी तरह छोटा बच्चा था, तभी से पढ़ते-पढ़ते इस ओहदे तक पहुँचा है तो बच्चे में भी हिम्मत आ जाती है और सचमुच वह शिक्षक समान बनने के मार्ग पर कदम बढ़ाने लगता है।

इसके विपरीत, यदि कुछ पूजा-सामग्री लेकर प्रतिदिन वह शिक्षक की आरती उतारता रहे, कीर्तन गाता रहे तो मात्र इस भावना से उसमें ज्ञान का संचार नहीं हो पायेगा। यही कारण है कि इतने वर्षों से माँ दुर्गा की भक्ति करते भी भक्तों में उनके गुणों और शक्तियों का संचार नहीं हो पाया।

एक बड़ा प्रश्न-चिह्न

यदि कोई भक्त अपनी पहली पूजा के समय अपने व्यक्तित्व में कुछ कमज़ोरियाँ लिये हुए था जैसे कि भय, चिड़चिड़ापन, स्वार्थ, दिखावा, चोरी, अहंकार, लोभ, मोह, ईर्ष्या, चुगली आदि तो वर्षों तक पूजा करते रहने पर

भी इनसे मुक्त नहीं हो पाता है। प्रश्न उठता है यह कैसी पूजा है? इसका औचित्य क्या है? मान लीजिये, बच्चा रोज स्कूल जाए और वैसा ही कोरा लौट आये, कुछ भी ना

किसी की वास्तविक जीवन कहानी को जाने बिना मात्र हाथ जोड़ लेना, कुछ फूल-पत्र आदि चढ़ावा चढ़ा देना केवल गुड़ियों की पूजा या खेल बनकर रह जाता है। जैसे यदि कोई बच्चा यह न जानता हो कि बापू गाँधी कौन थे, कब हुए, उन्होंने क्या किया तो वह भावना वश उनके चित्र पर माला तो अर्पण कर देगा परन्तु उनके चरित्र के उदात्त गुणों जैसे - सत्य, अहिंसा, वैश्विक प्रेम आदि का चिन्तन नहीं कर पायेगा फलस्वरूप उन्हें अपने चरित्र में भी नहीं उतार पायेगा। हमने भी रीति-रस्म अनुसार माँ दुर्गा पर अपनी भावनाएँ तो अर्पित की परन्तु उनके जीवन में समाए त्याग, तप, सेवा, समर्पण, अनासक्ति आदि का दिग्दर्शन न कर पाये। इसलिए हर साल पूजा-व्रत, यात्रा करते भी हम वहीं हैं, जहाँ ये सब करने से पहले थे।

सीखे, ना कोई आचरण बदले तो प्रश्न-चिह्न खड़ा होगा कि रोज स्कूल जाने का औचित्य क्या है?

चरित्र गाए पर चरित्रवान नहीं बने

हमारी पूजा-पद्धति पर भी प्रश्न-चिह्न खड़ा हो रहा है कि हम बदले क्यों नहीं? इसका एकमात्र कारण यही नज़र आता है कि हमने हाथ तो जोड़े पर मन नहीं जोड़ा। मस्तक तो झुकाया पर मस्तक में विद्यमान आत्मा को देखना नहीं सीखा। दर्शन तो किये पर खुद को दर्शनीयमूर्त नहीं बनाया। देवी को सुहाग का प्रतीक लाल जोड़ा तो पहनाया परन्तु अमरनाथ शिव को अपना अमर सुहाग स्वीकार नहीं किया। देवी का गहनों से, फूलों से शृंगार किया पर खुद को गुणों के गहनों से नहीं सजाया। देवी की आरती उतारी परन्तु अपने भीतर ज्ञान का दीप नहीं जलाया। देवी के पास कलश स्थापित किया परन्तु खुद के मस्तक को ज्ञान से खाली ही रखा। देवी के चरित्र गाए परन्तु खुद चरित्रवान नहीं बने। परिणाम यह हुआ कि एक दिन या नौ दिन या साल में दो बार पूजा करके भी हम अन्दर से खाली ही बने रहे। पूजा करने से पहले और पूजा करने के बाद के व्यक्तित्व में कोई अन्तर नहीं आया।

माँ दुर्गा ने कल्प पहले जो पढ़ाई पढ़ी थी, वर्तमान समय भगवान शिव उसी ज्ञान-कलश को लेकर धरती पर अवतरित हुए हैं और हर नर-नारी को धारण करा रहे हैं। आइये, इस नवरात्रि पर कुछ नया करें। याचना, प्रार्थनाएँ तो बहुत जन्म कर लीं, अब ज्ञान-कलश धारण कर याचना-प्रार्थनाओं से ऊँचे उठकर जग की यातना मिटाने के लिए कटिबद्ध हों। ...

माँसाहार निषेध दिवस पर विशेष.....

माँसाहार करना और करना - दोनों ही महापाप हैं

■■■ शिवशरण अमल, बिलासपुर (छ.ग.)

अग्नि पर जब फल-फूल, अनाज, दूध-दही, घी-तेल, जड़ी-बूटी आदि डाले जाते हैं तो वह यज्ञ बन जाता है और यदि उसी अग्नि पर मुर्दा, हड्डी, माँस का टुकड़ा या मरा हुआ जीव रखा जाता है, तो वह चिता बन जाती है। भूख लगने का मतलब है जठराग्नि प्रज्वलित होना। इस अग्नि में जो भी डाला जाता है उसी के अनुसार परिणाम प्राप्त होता है। यदि इसमें शुद्ध-सात्विक भोजन डालेंगे तो वह यज्ञ बन जायेगा और यदि इसमें अंडा, मछली, माँस, चिकन आदि डाले जायेंगे तो वह चिता बन जाएगी। यज्ञ से देव वृत्तियों का जागरण होता है एवं इस प्रकार की उदरीय चिता से दानवीय वृत्तियों का जागरण होता है।

भारत की सनातन संस्कृति में भोजन को प्रसाद के रूप में ग्रहण करना बताया गया है। पहली रोटी गाय को व आखिरी रोटी कुत्ते को खिलाये जाने की प्रथा है। इस परंपरा के पीछे यही भावना है कि संसार के सारे जलचर, थलचर व नभचर प्राणियों को जीने का पूरा-पूरा अधिकार है।

ईश्वर ने मनुष्य को प्राणियों की अपेक्षा विशेष विभूतियाँ देकर अपना सहायक बनाया है एवं सम्पूर्ण सृष्टि की देखभाल करने तथा सभी प्राणियों की रक्षा का दायित्व सौंपा है परन्तु यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि रक्षक ही भक्षक बना हुआ है।

पर पीड़ा सम नहीं अधमाई

कहीं स्वाद के नाम से, कहीं प्रोटीन व विटामिन के नाम से, तो कहीं धर्म व मजहब के नाम से बेजुबान पशुओं को मारा-काटा जा रहा है। एक ओर तो वह अपने को ईश्वर-पुत्र, ईश्वर का भक्त कहलाता है, वहीं दूसरी ओर उसकी रचना जीव-जन्तुओं को ही निर्दयता से हलाल कर रहा है। यह बात कितनी विरोधाभासी है? इस पर विचार करने की आवश्यकता है। महर्षि वेदव्यास ने 18 महापुराणों की रचना की है, उनका सारांश यही है कि -

अष्टदशे पुराणेषु, व्यासस्य वचनम् द्वयं।

परोपकाराय पुण्याय, पापाय परपीडनम्॥

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी रामचरित मानस में यही कहा है -

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।

पर पीड़ा सम नहीं अधमाई॥

साक्षात् नर-पिशाच

जरा कल्पना कीजिये कि जब हमारे शरीर में एक कांटा चुभ जाता है, तो कितनी पीड़ा होती है? फिर उस प्राणी की हालत क्या होती होगी जिसका जीते जी शरीर काटा जाता है? जब किसी प्राणी को मारते हैं तो उसके

आँसू निकल आते हैं, वह प्राणों की भीख मांगता है, दया की याचना करता है, चिल्लाता है, रोता है, क्रन्दन करता है, पुकारता है, संघर्ष करता है, घबराता है, मल-मूत्र त्याग कर देता है, आँखें लाल हो जाती हैं, मुँह से झाग निकल जाती है, फिर भी मनुष्य इतना निर्दयी व निष्ठुर है कि जीते जी उसे मौत के घाट उतार देता है। इस तरह की क्रूरता को पैशाचिक वृत्ति नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे? वह मानव साक्षात् नर-पिशाच नहीं तो और क्या कहा जायेगा?

पाप कर्म में हाथ बँटाने वाला पापी

शास्त्रों का कथन है कि माँसाहार के लिए सहयोग करने वाले, बेचने वाले, खरीदने वाले, मारने वाले, पकाने वाले, परोसने वाले, खिलाने वाले, खाने वाले, उसकी कमाई का उपयोग करने वाले – सबके सब इस महापाप के भागीदार बनते हैं। कुछ लोग तर्क देते हैं कि भले ही हम माँस के व्यापार में लिप्त हैं परन्तु हम खाते नहीं हैं अतः हम पापी नहीं हैं परन्तु यह तर्क आत्म प्रवंचना से ज्यादा कुछ नहीं है। पाप के कार्य में किसी तरह भी हाथ बँटाने वाला, पापी ही बन जाता है। जो लोग स्वयं माँसाहारी न होने के बावजूद माँसाहार को बढ़ाने में किसी तरह का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहयोग देते हैं, वे कभी-कभार माँस खाने वालोंकी अपेक्षा ज्यादा पापी हैं, ज्यादा दोषी हैं। वैज्ञानिक शोधों का कहना है कि जो लोग बूचड़खानों में अथवा माँसाहारी होटलों में काम करते हैं या बूचड़खानों अथवा माँसाहारी होटलों के आस-पास रहते हैं, उनमें हार्टअटैक, कैंसर आदि कई तरह की बीमारियों की संभावना 30 से 40 प्रतिशत बढ़ जाती है। उन लोगों का शरीर हमेशा जर्जर, मन हमेशा अशांत, भावनाएँ हमेशा कुंठित रहती हैं, जिससे उनके सभी क्रिया-कलाप निकृष्ट स्तर के हो जाते हैं। उन लोगों की बुद्धि इतनी भ्रमित हो जाती है कि न सोचने लायक सोच पाते हैं, न बोलने लायक बोल पाते हैं और न ही करने लायक कर पाते हैं। उनकी सारी की सारी प्रतिभा माँसाहारी वातावरण में कुंठित होकर रह जाती है। उनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है, स्वभाव में जिद्दी-पन आ जाता है। वे अपनी अनुचित बात को उचित ठहराते हैं तथा दूसरे की उचित बात को भी नहीं मानते हैं, इस कारण इनके रिश्ते-नाते, दोस्ती ज्यादा देर तक टिक नहीं पाते हैं। उनका जीवन हमेशा तनाव व अवसाद से ग्रस्त रहता है एवं आंतरिक ज्वाला से दग्ध होता रहता है।

अकाल-मृत्यु के शिकार

जीवों के माँस के साथ ही नकारात्मक ऊर्जा व विषैले तत्व भी शरीर के अन्दर जाते हैं जिनसे नाना प्रकार की व्याधियों का शिकार होना पड़ता है। एक अनुमान के मुताबिक लगभग पाँच लाख लोग प्रतिवर्ष माँसाहार के कारण अकाल-मृत्यु का शिकार बनते हैं। चिकित्सा विज्ञान के अनुसार, बूचड़खानों व माँसाहर वाले होटलों के आस-पास भूकम्प व अन्य तरह की प्राकृतिक आपदाओं की सम्भावना काफी हद तक बढ़ जाती है।

बन्दर से भी बदतर कैसे?

मानव का शरीर शुद्ध-सात्विक भोजन के लिए बना हुआ है। हिंसक जीवधारियों के दाँत, चोंच, नाखून नुकीले होते हैं। वे पानी को भी जीभ से चाट कर पीते हैं। शास्त्रों में मनुष्य को कंद, मूल, फल खाने वाले ऋषियों की संतान बताया गया है, फिर अपने आहार में माँस को हिस्सा बनाना कतई उचित नहीं। विज्ञान के अनुसार, यदि मानव को बन्दर का विकसित रूप मान भी लिया जाए तो भी मनुष्य शाकाहारी बन्दर से भी बदतर कैसे हो सकता है?

प्रकृति प्रदत्त पर्याप्त सुविधाएँ

कुदरत ने सभी प्राणियों को जीने, रहने व खाने-पीने की पूरी सुविधा प्रदान की है। प्रकृति प्रदत्त शाक, भाजियों, फूलों, फलों, अनाजों में पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक तत्व पाए जाते हैं। गाय के दूध को सर्वश्रेष्ठ आहार माना गया है। सोयाबीन, पालक, लौकी व दालों में पर्याप्त प्रोटीन व विटामिन पाए जाते हैं। मानव के पाचन संस्थान के लिए यही फिट हैं जबकि माँस के पचने में काफी समय लगता है जिससे नाना प्रकार के दुष्परिणाम उत्पन्न होते हैं।

प्रायश्चित की गुंजाइश नहीं

चोरी करना, झूठ बोलना, धोखा देना, झूठा इल्जाम लगाना, झूठा मुकदमा दायर करना भी अपराध व पाप हैं, फिर भी इनमें कहीं न कहीं प्रायश्चित्त अथवा सुधार की सम्भावना बनी रहती है। उदाहरण के लिए, अगर कोई व्यक्ति किसी के खिलाफ झूठा मुकदमा दर्ज कर देता है तो कालांतर में 'आउट ऑफ कोर्ट' सेटलमेंट करके उस गलती को सुधार सकता है। यदि किसी व्यक्ति ने, किसी के यहाँ चोरी की तो बाद में कभी गलती महसूस होने पर उस वस्तु को वापस करके क्षमा-याचना कर सकता है।

ज्ञानामृत

यदि किसी ने, किसी के साथ विश्वासघात किया है तो देर-सबेर माफी मांगकर प्रायश्चित्त कर सकता है। इसी तरह जुआ खेलना, शराब अथवा किसी अन्य तरह का नशा करना भी जघन्य अनैतिक कृत्य माने जाते हैं परन्तु इनमें भी प्रायश्चित्त व सुधार की गुंजाइश बनी रहती है। जुआ खेलने वाला कालांतर में जुआ खेलना छोड़ कर सामान्य जीवन जी सकता है, शराब, गांजा, अफीम आदि नशों के आदी भी अपनी आदत में सुधार करके समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित हो सकते हैं। परन्तु किसी जीव की हत्या करने के बाद प्रायश्चित्त व सुधार करने के सारे विकल्प समाप्त हो जाते हैं क्योंकि न तो उससे माफी मांग सकते हैं और न ही उसे दुबारा जीवन दे सकते हैं।

बीमारियाँ, तनाव और लोक-निंदा

इस प्रकार, हम यह कह सकते हैं कि माँस खाने या खिलाने के लिए या धर्म के नाम पर की जाने वाली जीव-हत्याएँ सबसे जघन्य अपराध या पाप हैं और यह पाप लोक-परलोक दोनों को बिगाड़ने वाला है। इस लोक में नाना प्रकार

की बीमारियाँ, तनाव, लोक-निंदा से कोई बचा नहीं सकता तो मृत्यु के पश्चात् नरक की यातनाएँ भोगना अवश्यम्भावी है।

हमारे सभी महानायक श्री राम, श्रीकृष्ण, महावीर, गुरुनानकदेव, महात्मा बुद्ध, कबीर, गाँधी, ईसा, मोहम्मद आदि ने 'प्राणी मात्र से प्रेम करो' का सन्देश दिया है। अतः वक्त का तकाजा है कि जितनी जल्दी हो सके हमें इस पाप एवं पापमय वातावरण से अलग होकर शुद्ध-सात्विक वृत्ति की ओर अग्रसर हो जाना चाहिए।

हम नृप दिलीप के वंशज हैं, जो गाय चराने जाते थे। यदि सिंह सामने आ जाए, तो खुद आगे बढ़ जाते थे। हम उस शिवि के बेटे-बेटी, जो नहीं सोचते थे अपना। रक्षा में एक कबूतर की, खुद मांस तौलते थे अपना। न्याय दृष्टि में कुदरत की, सब प्राणी एक समान हैं। सबको जीने, खाने, रहने का अधिकार समान है। जीओ और जीने दो सबको, यही हमारा गान है।
“आत्मवत् सर्वभूतेषु” ही हमारी पहचान है। ...

ईश्वरीय ज्ञान ने मेरी जिंदगी बदल दी

■■■ वीरपाल सिंह, जिला कारागार, अलीगढ़

मुझे ईश्वरीय ज्ञान से आत्मिक व शारीरिक पीड़ा से मुक्ति तथा बहुत-बहुत शांति मिली है। दिनांक 21 मई, 2015 को लड़ाई-झगड़े के कारण मुझे जेल भिजवा दिया गया था। उस समय सिर, हाथ, पैर, घुटने, आँख, कान अर्थात् पूरे शरीर पर चोटों के कारण मैं पूर्णतः अस्वस्थ था। जिस्मानी डाक्टर से इलाज हुआ पर वह आंशिक था। उन्हीं दिनों जेल में ब्रह्माकुमारी बहनों व भाईयों का ज्ञान देने का कार्यक्रम शुरू हुआ व नियमित होने लगा। सुबह-सुबह 6:30 बजे, गिनती के बाद सात दिन का ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स चला जिसमें इच्छुक बंदी भाईयों ने भाग लिया। इसके बाद दिव्य गीत और मुरली सुनने का सौभाग्य मिला। इस कार्यक्रम के

माध्यम से मैं रूहानी डॉक्टर शिवबाबा को प्रतिदिन याद करने लगा जिससे आत्मिक संतुष्टि का उपहार



पाया। दिलाराम बाबा ने मेरे दिल को आराम दिया। मैं व मेरे बंदी भाई ज्ञानरस का आनंद लूटने लगे। अब हम सब कैदी भाई आपस में पूर्ण सद्भाव के साथ जीवन व्यतीत करते हैं। मैं आशा करता हूँ कि जिस प्रकार मुझे व मेरे साथी कैदी भाईयों को इस ईश्वरीय ज्ञान से शांति मिल रही है वैसे ही यह ज्ञान सारे विश्व में फैले, जिससे लाखों परिवारों को सुख-शांति मिले। इस ज्ञान बल से कलियुगी भ्रष्टाचार खत्म हो जाएगा, ऐसी मेरी शुभ भावना है। ■■■

नास्तिक से स्वाध्याय तक स्वाध्याय से स्वपरिवर्तन तक



■■■■ डॉ.कान्तिभाई बी.पटेल, पाटन (गुजरात)

मेरी आयु 64 साल है, मनोचिकित्सक की सेवायें पिछले 33 साल से कर रहा हूँ। मनोचिकित्सा में एम.डी.पास करने तक मैं पूरा नास्तिक था। मंदिर में दर्शन करने भी नहीं जाता था। विज्ञान का घमंड था। धार्मिक बातों का विरोध करता था और भगवान को भी चुनौती देता था जैसे कि मैं भगवान के बिना भी पत्ता हिला सकता हूँ आदि-आदि। मेरे नास्तिक होने की वजह थी धार्मिक जगत में फैली अंधश्रद्धा। उन दिनों मैं ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र के पड़ोस में रहता था लेकिन कभी भी सेवाकेन्द्र में भी नहीं गया।

मैंने पहला निजी अस्पताल सुभद्रानगर में बनाया। तब नींव पत्थर रखने की रस्म के लिए एक शास्त्रीजी से मिला और उनसे कहा, जो खराब से खराब मुहूर्त है वो निकालो। शास्त्रीजी दंग रह गये। उन्होंने मुहूर्त निकाला और नींव पत्थर रखने की विधि करने के लिए भी तैयार हुए परन्तु जमीन में से इन्सान की हड्डी निकल आई। वे भड़क उठे और बोले कि ऐसा मुहूर्त नहीं निकलवाना चाहिए। मैंने कहा, घबराओ मत, सारी जिम्मेवारी मेरी रहेगी। इन्सान की हड्डी निकलना मेरे लिए बड़े सुकून की बात है। अस्पताल के निर्माण के दौरान किसी भी मजदूर या कारीगर को कोई सामान्य खरोंच भी नहीं आई। अब इस अस्पताल में रोगियों को शान्ति की अनुभूति हो रही है।

पाटन में पहला मनोचिकित्सक होने के कारण रोगियों की संख्या ज्यादा ही रहती थी। कार्य की अधिकता के कारण मुझे PID (Prolapsed Intervertebral Disc) की बीमारी हुई। रोगियों पर कई बार गुस्सा भी आ जाता था, जिसे मैं सही मानता था। शाम तक काम करके थक जाता था, घर में भी चिड़चिड़ापन रहता था। ओर्थोपेडिक डॉक्टर ने कहा, आपको पूरे डेढ़ महीने बेड रेस्ट लेना पड़ेगा।

भक्ति के प्रति रुचि

पी.आई.डी.की बीमारी के समय मैं आराम में था। मुझे पढ़ने का बहुत शौक था। तब स्वाध्याय परिवार के एक

बड़े भाई मेरे पास आये और कुछ किताबें पढ़ने के लिए दे गए। किताबें बहुत अच्छी लगी। फिर उन्होंने पढ़ने के लिए 'गीतामृतम्' दिया। उसे पढ़ने से मेरी रुचि भक्ति की ओर बढ़ी। इसके बाद मैंने स्वाध्याय में जाना शुरू किया। करीब 15 साल तक स्वाध्याय किया। भगवान को मानने लगा। भक्ति की बातों की चर्चा रोगियों के साथ करने लगा और उनको भगवान की याद दिलाने लगा। सबका शरीर बनाने वाला एक ही भगवान है, उस नाते से हम सब भाई-भाई हैं, ऐसा मानने लगा। देवताओं को ही भगवान मानता था। भगवान कण-कण में हैं, हमारे हृदयस्थ हैं, जो होता है वो भगवान की मर्जी से होता है, ऐसा मानने लगा।

मैंने स्वाध्याय की चार परीक्षाएँ भी दीं। तीसरी परीक्षा (विचक्षण) में भारत भर में तीसरा स्थान हासिल किया और परमपूज्य पांडुरंगशास्त्री जी के हस्तों से प्रमाण-पत्र और जीवन की परीक्षा में उत्तीर्ण होने का वरदान भी पाया। इसके बाद मेरा जीवन अच्छी तरह व्यतीत होने लगा। मैंने भक्तफेरी और भावफेरी में जाना शुरू किया। पतंजलि चिकित्सालय में पुजारी बनकर आदिवासी क्षेत्र में पंद्रह साल सेवाएँ की।

ब्रह्माकुमार भाई-बहनों में दिखा रूहानी आकर्षण

एक दिन मुझे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा माउंट आबू में आयोजित 'माइन्ड बॉडी मेडिसिन' सम्मेलन में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ ब्र.कु.शिवानी दीदी, ब्र.कु.डॉ.गिरीश भाई, ब्र.कु.उषा बहन और ब्र.कु.शीलू बहन के आध्यात्मिक प्रवचन सुनकर प्रभावित हुआ। शान्ति की अनुभूति हुई। इन चार दिनों में सांसारिक जिम्मेवारियों का ख्याल भी नहीं आया। ब्र.कु.भाई-बहनों की चाल-चलन और चेहरे में रूहानी आकर्षण दिखाई दिया। बहनों की जेब में एक पैसा भी नहीं, फिर भी खुश थीं। उनकी बातों में सच्चाई और सफाई थी। वाणी में मधुरता और व्यवहार में प्यार दिखता था, गुस्से का

तो नामनिशान तक नहीं था। उनके जीवन में जो बदलाव देखा वो मैं पंद्रह साल में भी अपने में नहीं ला सका था।

प्रकृति भी भगवान की रचना

मैं देहधारी को ही भगवान मानकर चल रहा था। मेरी मान्यताएँ अलग हैं, यह बात मेरे ध्यान में आई। मैं भक्ति और ज्ञान को एक ही समझता था। खुद को शरीर मानकर देहअभिमान में चलता था। धर्म और अध्यात्म के बीच का अंतर नहीं समझता था। भगवान की और खुद की सही पहचान नहीं थी। शिव और शंकर को एक ही समझता था। आत्मा को ही परमात्मा मानता था। माउंट आबू में सम्मेलन में शामिल होने के बाद और ज्ञान सुनने के बाद मुझे लगा कि जिसको मैं ढूँढ़ रहा हूँ वो निराकार शिव परमात्मा ही हैं। मेरी उलझन सुलझ गयी। मेरे मन में ज्ञान की स्पष्टता आ गई और ज्ञान की गहराई में जाने की प्रेरणा मिली। इसके बाद सेवाकेन्द्र पर सात दिन का कोर्स किया, तब समझ में आया कि सृष्टिचक्र पाँच हजार वर्ष का है और उसमें ज्यादा से ज्यादा 84 जन्म मनुष्य योनि में ही होते हैं, न कि 84 लाख योनियों में। पहले प्रकृति को भी भगवान समझता था लेकिन अब समझ में आया कि प्रकृति भी भगवान की रचना है।

भटकना बंद हो गया

कई बार सोचता था कि भगवान ने जब गीता सुनाई थी तब उसे सुनने वाला अर्जुन कितना भाग्यशाली था! ब्रह्माकुमारीज में आया तो जानने को मिला कि स्वयं भगवान सत्य ज्ञान सुना रहे हैं, जो उन्होंने पाँच हजार साल पहले भी सुनाया था। दुनिया घोर अंधियारे में जी रही है। आत्मा और परमात्मा की सही पहचान न होने के कारण लोग इधर-उधर भटक रहे हैं। मैं कितना खुशानसीब हूँ कि मेरी बुद्धि का ताला खुल गया। इसके बाद सेवाकेन्द्र पर राजयोग सीखा और मुरली क्लास शुरू की। मेरा स्वधर्म शान्ति है, यह समझ में आया। आत्मा के सात गुणों और अष्ट शक्तियों को व्यवहार में लाना शुरू किया। धीरे-धीरे देवत्व जागने लगा और भटकना बंद हो गया। व्यर्थ और पुरानी बातें समाप्त हो गईं। जीवन में सुख, शांति और संतुष्टता आने लगी। स्वर्ग और नर्क का अंतर भी समझ में आया।

विकार ही असली दुश्मन हैं

भक्ति मार्ग में मैं रोज प्रातः और सायंकाल प्रार्थना करता था परन्तु बिना समझे करता था इसलिए उबासी

आती थी और प्रार्थना करना मशीनी व्यवहार लगता था। स्वयं को आत्मा निश्चय कर निराकार परमात्मा को याद कभी नहीं किया था। वास्तव में समीकरण ही गलत था तो उत्तर सही आता भी कैसे? जीवन में बदलाव नहीं के बराबर था। देह और देह के संबंधों को भूलकर, अव्यक्त स्थिति में स्थित होता ही नहीं था। अव्यभिचारी भक्ति के बारे में सुना जरूर था, फिर भी व्यभिचारी भक्ति करता था। मैं दूसरों को अपना दुश्मन समझता था और अपनी परिस्थिति के लिए उन्हें ही जिम्मेवार मानता था। कोई व्यक्ति नहीं परंतु विकार ही मेरे दुश्मन हैं, यह समझ में आया ईश्वरीय ज्ञान लेने के बाद। धन को ही माया समझता था परन्तु वास्तव में माया है लोभ, यह ज्ञान भी ईश्वर द्वारा मिला।

बदल डाला जीवन को

ब्रह्माकुमारीज में मुझे किसी ने भी, कभी भी यह नहीं कहा कि आप भक्ति छोड़ दो और न ही दूसरे संप्रदायों के बारे में कोई नकारात्मक बात की। यह बात बहुत अच्छी लगी। धीरे-धीरे ज्ञानमार्ग में और आगे बढ़ने लगा। कई किताबें पढ़ीं। अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होने लगा। स्वपरिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होता है, यह समझ में आया। हर रोज मुरली से स्वपरिवर्तन के भिन्न-भिन्न प्वाइन्ट्स मिलने लगे। राजयोग और मुरली ने मेरे जीवन को बदल डाला। सेवाकेन्द्र में नियमित आने से जीवन में बहुत सकारात्मक परिवर्तन आए जिसका प्रभाव मेरे परिवार पर भी पड़ा।

सम्बन्धों में मधुरता

मेरे घर का वायुमंडल सुधरने लगा क्योंकि मुरली सुनने के बाद उसके प्वाइन्ट्स परिवार के सदस्यों को भी सुनाता था। उनकी भी रुचि बढ़ी और उन्होंने पीस ऑफ माइंड चैनल देखना शुरू किया। कभी-कभी सेवाकेन्द्र पर भी आने लगे। 'कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो' का अभ्यास शुरू हुआ। वाणी में ज्ञान रत्नों का प्रयोग होने लगा। संबंधों में मधुरता आने लगी। परिवार के साथ टी.वी. धारावाहिक देखने के बजाय अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज कार्यक्रम देखने लगा। मन को शान्ति और खुशी की अनुभूति होने लगी। धर्मयुक्त और योगयुक्त कर्म होने लगे। एक-एक विचार बीज है, यह समझ में आया तो संकल्प श्रेष्ठ होने लगे। श्रीमत के अनुसार जीवन शुरू हुआ।

एक बार गुरुग्राम (हरियाणा) स्थित ओम शान्ति

रिट्रीट सेंटर में एक सम्मेलन में भाग लेने का सुअवसर मिला। वहाँ का वातावरण बहुत शक्तिशाली है। हर इमारत को अलग-अलग रूहानी नाम दिये गए हैं। ज्ञान रत्नों से भरपूर स्लोगन दीवारों पर लगे हैं। मुझे ऐसा छोटा ओ.आर.सी. बनाने के संकल्प आने लगे। मेडिटेशन करते समय यह योजना बार-बार कल्पना में आती रही। उसके फलस्वरूप एक एकड़ जमीन में 80 बिस्तरों वाला हॉस्पिटल बनाया है जहाँ बाबा का कमरा भी है और रोज ज्ञान मुरली की क्लास भी चलती है।

मैंने मेडिकल प्रैक्टिस में भी ईश्वरीय ज्ञान को लागू करना शुरू किया है। Cognitive Behaviour Therapy की जगह Spiritual Behaviour Therapy और

Psychospiritual Counselling शुरू की है। रोगियों के साथ ज्ञान रत्नों की लेन-देन करना शुरू किया है। हॉस्पिटल के पूरे स्टाफ को सात दिन का कोर्स करवाया है। ब्रह्माकुमारी संस्थान के अलग-अलग कार्यक्रम हॉस्पिटल में होने लगे हैं। रोगी यहाँ आने से ही शांति महसूस करते हैं। उन्हें स्वमान बताये जाते हैं, जिन्हें वे 50 बार लिख कर लाते हैं। दिव्य गीतों की पंक्तियों को बार-बार मन में गुनगुनाने की सलाह दी जाती है जैसे कि 'हर मुश्किल का हल होगा, आज नहीं तो कल होगा।' रोगियों की अंधश्रद्धा दूर करने की चर्चा होती है। चिकित्सा कार्य के साथ आध्यात्मिकता आयी तो धन के साथ दुआएँ कमाना शुरू हो गया। अब मैं अपने को बहुत हल्का महसूस करता हूँ। ■■■

बाबा की प्रेरणा से आँखों की रोशनी मिली

■■■ ब्रह्माकुमार श्यामलाल, उदयपुर

मेरी आँखों में मोतियाबिन्द था। सभी की राय से एक दिन मैंने निश्चय कर ऑपरेशन करा लिया। डॉक्टर की राय थी कि करीब एक या डेढ़ महीने पश्चात् मेरी रोशनी आ जायेगी। आखिर डेढ़ माह पश्चात् डॉक्टर साहब के पास पहुँचा तो चौंका देने वाला परिणाम सामने आया कि रोशनी नहीं आई है। जाँच के बाद पता चला कि किसी दवाई का रिएक्शन हो गया है।

कुछ समय पूर्व मेरी रीढ़ की हड्डी का ऑपरेशन हुआ था। उसकी दवाइयाँ चल रही थीं तो हो सकता है कि किसी दवाई का ही रिएक्शन हो गया हो, ऐसा मैंने सोचा। डॉक्टर ने यह भी बताया था कि मेरी आँख की वेन जल चुकी है अतः रोशनी लौटने की संभावना नहीं है।

कुछ दिनों के पश्चात् दूसरी आँख में भी मोतियाबिन्द हो गया। मैं मुरली भी नहीं पढ़ सकता था। ज्ञानामृत पढ़े बिना चैन नहीं पड़ता था। अन्त में मैंने दूसरी आँख का ऑपरेशन कराना उचित समझा। कहावत है कि दूध का जला छाछ को भी फूँक कर पीता है। अतः मैंने उदयपुर के स्थान पर अहमदाबाद में ऑपरेशन कराने का निश्चय किया। वहाँ मेरी आँखों के सारे टेस्ट लिये गये किन्तु निराशा ही हाथ लगी। आँखों की वेन सूख चुकी होने के कारण रोशनी लौटने की सम्भावना नहीं थी। मैं उदयपुर लौट आया। यहाँ पर आँखों के तीन हॉस्पिटल

हैं। मैंने बारी-बारी तीनों में जाँच कराई किन्तु वही उत्तर मिला। दोनों ही आँखों से मुझे बहुत धुंधला-सा दिखाई देता था।

अब मैं शेष जीवन को एक बोझ समझ कर अपने दुःख के दिन बिता रहा था। मैं काफी निराश हो गया था। जीवन जीने की आशा भी समाप्त हो चुकी थी। एक दिन अचानक अमृतवेले मुझे ऐसा अहसास हुआ कि कोई मुझे बार-बार जनरल हॉस्पिटल के डॉक्टर से आँखों की जाँच कराने के लिए निर्देश दे रहा है। मैंने यह भी ठीक समझा और एक दिन उनके घर जाकर जाँच कराई। डॉक्टर साहब ने दूसरी आँख, जिसमें मोतियाबिन्द था, उसका ऑपरेशन कराने की राय दी। बाबा को मैंने सारी बात बताई तो ऐसा लगा कि ऑपरेशन कराना ही ठीक है। आखिर मैं मेरा ऑपरेशन हो गया। डॉक्टर ने डेढ़-दो माह के पश्चात् आँखों के चश्मे के नम्बर निकालने के लिए कहा। नियत समय पर मैं डॉक्टर के पास पहुँचा। उन्होंने चश्मे के नम्बर निकाल दिये। धीरे-धीरे मुझे दिखने लगा। मैं अब मुरली भी पढ़ने लगा। ज्ञानामृत जितने माह की नहीं पढ़ी थी वो सभी पढ़ डालीं। बाबा ने मुझे आँखों की रोशनी पुनः लौटा दी। अब मैं प्रत्येक मुरली को दो बार अवश्य ही पढ़ता हूँ। शुक्रिया बाबा। ■■■



1. **वाराणसी** : अघोर पीठ के शंकराचार्य स्वामी नरेन्द्रानन्द जी को राखी बांधती हुई ब.कु. सुरेन्द्र बहन। 2. **काठमाण्डु**: नेपाल के माननीय प्रधानमंत्री भ्राता के.पी.शर्मा ओली जी को राखी बांधती हुई ब.कु. राज बहन। 3. **नई दिल्ली**: भारत के पूर्व प्रधानमंत्री भ्राता मनमोहन सिंह जी को राखी बांधती हुई ब.कु. आशा बहन। 4. **बैंगलोर**: कर्नाटक के महामहिम राज्यपाल वजुभाई वाला जी को राखी बांधती हुई ब.कु. अंबिका बहन। 5. **भुवनेश्वर**: उड़ीसा के महामहिम राज्यपाल भ्राता गणेशी लाल जी को राखी बांधती हुई ब.कु. लीना बहन। 6. **गांधीनगर**: गुजरात के महामहिम राज्यपाल भ्राता ओम प्रकाश कोहली जी को राखी बांधती हुई ब.कु. कैलाश बहन। 7. **कोलकाता**: पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल भ्राता केशरीनाथ त्रिपाठी जी को राखी बांधती हुई ब.कु. कानन बहन। 8. **अगरतल्ला**: त्रिपुरा के महामहिम राज्यपाल भ्राता कप्तान सिंह सोलंकी जी को राखी बांधती हुई ब.कु. कविता बहन। 9. **बारीपदा**: झारखण्ड की महामहिम राज्यपाल बहन द्रौपदी मुर्मू जी को राखी बांधती हुई ब.कु. ऊमा बहन। 10. **पुडुचेरी**: पुडुचेरी की उपराज्यपाल बहन किरण बेदी जी को राखी बांधती हुई ब.कु. कविता बहन। 11. **नई दिल्ली**: सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता एस.ए. बोबडे को राखी बांधती हुई ब.कु. पुष्पा बहन। 12. **नई दिल्ली**: रेल राज्यमंत्री भ्राता मनोज सिन्हा जी को राखी बांधने के बाद आत्म-स्मृति का तिलक लगाती हुई ब.कु. सविता बहन।



1. गोरखपुर: ऊ.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्या नाथ जी को राखी बांधती हुई ब.कु. पुष्पा बहन।
2. जयपुर: राजस्थान की माननीया मुख्यमंत्री बहन वसुन्धरा राजे सिंधिया जी को राखी बांधती हुई ब.कु. सुषमा बहन।
3. चण्डीगढ़ : हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री भ्राता मनोहर लाल खट्टर जी को राखी बांधती हुई ब.कु. उत्तरा बहन।
4. अलिराजपुर: मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री भ्राता शिवराज सिंह चौहान जी को राखी बांधती हुई ब.कु. माधुरी बहन।
5. विजयवाड़ा: आन्ध्रप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री भ्राता चन्द्रबाबू नायडू जी को राखी बांधती हुई ब.कु. शान्ता बहन।
6. पटना: बिहार के माननीय मुख्यमंत्री भ्राता नीतीश कुमार जी को राखी बांधती हुई ब.कु. संगीता बहन।
7. रायपुर: छत्तीसगढ़ के माननीय मुख्यमंत्री डा. रमन सिंह जी को राखी बांधती हुई ब.कु. उर्मिल बहन।
8. देहरादून: उत्तराखण्ड के माननीय मुख्यमंत्री भ्राता त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी को राखी बांधती हुई ब.कु. नीलम बहन।
9. रांची: झारखण्ड के माननीय मुख्यमंत्री भ्राता जयराम ठाकुर जी को राखी बांधती हुई ब.कु. निर्मला बहन।
10. शिमला: हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री भ्राता प्रेम खाण्डू जी को राखी बांधती हुई ब.कु. सुनीता बहन।
11. ईटानगर: अरुणाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री भ्राता प्रेम खाण्डू जी को राखी बांधती हुई ब.कु. झुनु बहन।
12. देहरादून: उत्तराखण्ड के माननीय मुख्यमंत्री भ्राता रघुवर दास जी को राखी बांधती हुई ब.कु. नीलम बहन।